मस्जिद पर लाउडस्पीकर के बारे में सऊदी अरब का बड़ा फैसला 6
नाबालिग के साथ दुष्कर्म कर मतांतरण का प्रयास 15
ब्लैक फंगस में आयुर्वेद का चमत्कार 16

पाक्षिक
पाथेय कण
₹ 5
www.patheykan.com
ज्येष्ठ शु. 6, वि.2078, युगाब्द 5123, 16 जून, 2021

अद्वितीय है भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

इस अंक के साथ है गत अंक की सामग्री

पाथेय कण के इस अंक से पूर्व के दो अंक (16 मई तथा 1 जून, 2021) लॉकडाउन के कारण छप नहीं पाए थे। इन्हें सदस्यों के व्हाट्सएप पर ही भेजा गया था। परन्तु, अनेक सदस्यों का कहना था कि व्हाट्सएप पर अंक की सामग्री पढ़ना कष्टदायक है। अतः इस अंक में 1जून,2021 के अंक की सामग्री भी जोड़ दी गई है।

16 अप्रैल एवं 1 मई, 2021 का संयुक्तांक विशेषांक था (निधि समर्पण विशेषांक)। परन्तु छपकर आते-आते लॉकडाउन लग जाने के कारण उसका प्रेषण-कार्य कुछ दिन पूर्व ही समाप्त हुआ है। डाक से संभव नहीं हो पा रहा था। जिला केन्द्रों पर बण्डल भेजे गए हैं। अपने क्षेत्र के अंक जिला केन्द्रों से प्राप्त कर लेंगे तो सभी को सुविधा होगी।

– **माणकचन्द,** प्रबंध सम्पादक

पाथेय कण पोर्टल

पिछले 36 वर्षों (1985) से पाथेय कण पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। एक लाख से अधिक प्रसार संख्या वाली इस पत्रिका की पहुंच संपूर्ण देश सहित राजस्थान के आधे से अधिक गाँवों तक है। आज इंटरनेट का युग है, समाचार तेजी से प्रसारित होते हैं। अत: समय की मांग को देखते हुए एक न्यूज पोर्टल शुरू करने पर विचार किया गया। इस विचार को मार्च 2020 में मूर्त रूप दिया।

इसका उद्देश्य एक ऐसा प्लेटफॉर्म लाना था, जहां लोगों को अपराध व राजनीति से परे, मुख्य रूप से देश व समाज से सरोकार रखने वाले समाचार, विश्लेषणात्मक व वैचारिक लेख पढ़ने को मिलें। साथ ही नकारात्मक व विभाजनकारी समाचारों का वास्तविक पहलू भी पाठकों के सामने उजागर हो। पोर्टल का कलेवर ऐसा हो जिससे पाठकों का पूरा परिवार जुड़ाव का अनुभव करे। इसके लिए महिलाओं व बच्चों से जुड़ी रुचिकर पठन सामग्री देने का भी प्रयास किया गया है। प्रश्नोत्तरी, महापुरुष पहचानो, कविताएं व कहानियां जैसी श्रेणियां उसी की एक कड़ी हैं।

पोर्टल टीम – पाथेय कण पोर्टल की कोर टीम अवैतनिक है व स्वयंसेवी भाव से पोर्टल के लिए काम करती है। पोर्टल पत्रकारिता के नए छात्रों को कार्यानुभव व प्रोत्साहन राशि प्रदान कर उनके कौशल संवर्धन की दिशा में भी सक्रिय है। पोर्टल पर जाने के लिए https://patheykan.com को क्लिक करें।

आपने लिखा है

लोकतंत्र पर भारी लहूतंत्र-कहाँ है 'अवार्ड वापसी गैंग?'

अंबेडकर जी ने चुनावों को लोकतंत्र का उत्सव कहा था, परन्तु बंगाल में इसे 'खेला होब्बे' कहा गया। नतीजे आने की शाम से ही लोकतंत्र के इतिहास की मान-मर्यादाओं को चूर-चूर कर मानवतावादी भारत की आत्मा को कुचलने का बड़ा षड्यंत्र प्रारंभ हुआ, जिसके चलते भारतीय लोकतंत्र में एक शब्द # Bangalviolence ट्रेंड कर गया।

भाजपा का प्रभाव बंगाल में बढ़ने से राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव की आहट आने लगी थी। सत्ताधारी दल ने आमजन में भय का माहौल बनाते हुए भारतीय जनता पार्टी के 130 से ज्यादा कार्यकर्ताओं को पिछले 18 महीने में मौत के घाट उतार दिया। सुभाष चंद्र बोस व रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांतिपूर्ण बंगाल में पुनः रक्तपात की राजनीति को जन्म दिया, तब सही रूप में ''खेला होब्बे'' का अर्थ समझ में आया। बंगाल की वर्तमान राजनीति में राजनीतिक हत्या स्थाई संरचना बन गई है। पहले वामपंथी राजनीतिक रूप से हिंसा का इस्तेमाल करते थे किंतु तृणमूल कांग्रेस ने इसे शासन व्यवस्था का एक स्थाई अंग बना दिया।

आज भारतीय लोकतंत्र पर जब लहूतंत्र भारी हुआ है तब तथाकथित मानवाधिकारवादी एवं अवार्ड वापसी गैंग कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं।

–**राज रोहित पारीक,** rohitpareek93@gmail.com

श्रद्धांजलि

संवित् सोमगिरिजी महाराज का देवलोक गमन

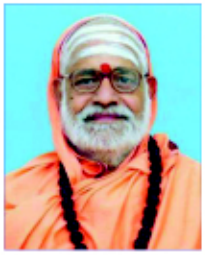

राजस्थान के जाने-माने शंकरी परम्परा के महान संत संवित् सोमगिरि जी महाराज का 78 वर्ष की उम्र में 18 मई की रात्रि कोरोना से निधन हो गया। उनके अनुयायियों द्वारा बैकुंठी निकालकर बीकानेर स्थित आश्रम परिसर में ही उन्हें भू-समाधि दी गई।

मूल रूप से इंजीनियर रहे सोमगिरि जी महाराज ने 23 वर्षों तक अर्बुदांचल की तपोभूमि में वेदांत का अध्ययन करते हुए गहन साधना की। वे बीकानेर के शिवबाड़ी स्थित श्री लालेश्वर मठ के अधिष्ठाता थे। आपने देशभर में गीता ग्रंथ के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनूठा कार्य करते हुए एक विशेष पहचान बनाई।

वे संघ की धर्म जागरण समन्वय गतिविधि के कार्यों में सदैव सहयोग करते रहे। हरिद्वार में आयोजित 'साधु स्वाध्याय संगम' में भी सभी को आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। पाथेय कण रजत जयंती समारोह समिति के आप संरक्षक थे। रा.स्व.संघ व विहिप, जयपुर ने वर्चुअल माध्यम से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया।

पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ शु.6 से आषाढ़ कृ.6
वि.सं.2078, युगाब्द 5123

16-30 जून, 2021
वर्ष 37 : अंक 05

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
मो. 9929722111

अंक नहीं मिलने की सूचना अपने नाम व पते सहित व्हाट्सएप (WhatsApp) द्वारा निम्नलिखित मो.न. पर दें।
7976582011

E-mail : patheykan@gmail.com
Website : www.patheykan.in

अभिव्यक्ति की सीमा रेखा

संतोष का विषय है कि कोरोना की दूसरी लहर उतार पर है। इस लहर ने बड़ी संख्या में अपनों के बिछुड़ जाने का दुःख बहुत से परिवारों को दिया। परन्तु सरकार और मोदी विरोधी लॉबी ने इस दुःख को कई गुणा बढ़ाने का काम किया। तथाकथित सेक्युलर, लिबरल, वामपंथी लॉबी ने दुनिया भर में भारत की बदनामी करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी, मानो भारत उनका देश नहीं है, देशवासी उनके अपने नहीं हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, परन्तु अभिव्यक्त क्या करना है और कहां करना है, इसकी समझ तो चाहिए। शरीर के सड़-गल गए अंग को चिकित्सा के लिए डॉक्टर को दिखाना तो ठीक है, परन्तु बदन उघाड़कर हर व्यक्ति को दिखाते फिरने से क्या घाव ठीक हो जाएंगे? यदि आपकी नजर में घर के किसी व्यक्ति में दोष है तो उसकी चर्चा अपनों से करना तो समझ में आता है, परन्तु सब जगह उसका ढिंढोरा पीटते रहना क्या उचित है? कहीं तो सीमा रेखा होनी चाहिए।

भारत में है एक समूह, जो अपनी जड़ों से कटा हुआ है, जिसे चिढ़ है अपनी भाषा, संस्कृति, अपनी परम्परा, मानबिंदु, पुरातन ज्ञान-विज्ञान से। इन्हें कोसते-धिक्कारते और गलत सिद्ध करने के लिए वे लगातार प्रयत्नशील रहते हैं। न जाने क्यों उन्हें स्वदेशी और भारत के अपने दम पर प्रगति करने से खीज है? विश्व में भारत के प्रति बढ़ता सम्मान उन्हें सुहाता नहीं है। इसलिए स्वाभाविक ही है कि वे रा.स्व.संघ, भाजपा, मोदी से नाखुश हैं। वे तथ्यों की अनदेखी और गलत व्याख्या तक करते हैं।

अभी 7 जून को राष्ट्र के नाम अपने संदेश में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पहले किसी बीमारी का टीका भारत आने में वर्षों लग जाते थे, यह पहला अवसर है जब दुनिया के विकसित देशों के साथ-साथ भारत ने भी कोरोना-टीका का विकास और निर्माण कर लिया। अब यह तो गर्व करने की बात है न? परन्तु भारत पर गर्व करने की कोई बात उस गैंग को कैसे स्वीकार्य हो! सो, एक एंकर रविश कुमार ने इसी बात को लेकर मोदी की खिल्ली उड़ाई, और फिर समाचार बन गया-' रविश कुमार ने मोदी पर कसा तंज'।

ऐसे लोगों की असलियत उजागर करना जरूरी है। इसके लिए लोगों तक सही जानकारी पहुँचानी होगी, समाचार व घटनाओं का तथ्यपरक विश्लेषण लोगों के ध्यान में लाना होगा। इस कार्य में समाज के विभिन्न वर्गों के जितने बन्धु-भगिनी सक्रिय होंगे, उतना अच्छा है। हमें रामधारी सिंह दिनकर की इन पंक्तियों पर जरूर ध्यान देना चाहिए-

'समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याघ्र, जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध'

सोशल मीडिया हमारे पास इस कार्य के लिए उपयुक्त प्लेटफार्म है। अखबारों-पत्रिकाओं में भी तथ्यों के विपरीत समाचार या लेख छपते हैं तो अपना विरोध-असहमति अवश्य दर्ज कराना चाहिए। वेदों में कहा गया है-

समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

अर्थात् सबके लक्ष्य , संगठन, मन और चित्त समान हों। प्रजातंत्र में विचारधाराएं भिन्न हो सकती हैं, रास्ते भिन्न हो सकते हैं परन्तु मन व चित्त तो समान हों। मतभेद हो सकते हैं, परन्तु मन भेद नहीं। सभी तो इस भारत माता की संतान हैं। सबका लक्ष्य एक ही है- भारत में रहने वाले सब सुखी हों तथा विश्व में भारत का मान-सम्मान बढ़े। क्या यह सीमा रेखा हो सकती है? इस सीमा रेखा के अंदर रहकर भले ही हम एक दूसरे का विरोध करें या फिर लेख लिखें, कुछ भी करें, परन्तु भारत- यह हम सब का आराध्य है, यह हमेशा याद रहना चाहिए। भारत है तो हम हैं। भारत का सम्मान है तो हमारा सम्मान है। ●

ज्ञान गंगा

दशकूपसमा वापी दशवापी समो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।

दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष का महत्व होता है।

(मत्स्यपुराण 154/512)

अद्वितीय है भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा

मनोज गर्ग

पुरी (ओड़िशा) का जगन्नाथ मंदिर देशभर के भक्तों की आस्था का केन्द्र है, जहाँ हमेशा श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। मंदिर अपनी भव्यता और नक्काशी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। मंदिर में श्रीकृष्ण, बलराम और उनकी बहिन सुभद्रा की काष्ठ प्रतिमाएं हैं। प्रतिवर्ष तीनों प्रतिमाओं को रथों पर विराजमान कर निकाली जाने वाली विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा में लाखों लोग शामिल होते हैं। आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (इस बार 12 जुलाई,2021) को इस रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। रथयात्रा पुरी जगन्नाथ मंदिर से 2 किमी. की दूरी पर स्थित गुंडिचा मंदिर पहुंचती है तथा कुछ दिन वहीं रहकर पुनः पुरी लौट आती है।

मंदिर की पृष्ठभूमि

यह वैष्णव सम्प्रदाय का मंदिर है, जो भगवान विष्णु के 8वें अवतार श्रीकृष्ण को समर्पित है। जगन्नाथ का अर्थ होता है– जगत के स्वामी। जगन्नाथपुरी हमारे चार धामों में से एक है। शेष तीन धाम हैं– बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड), द्वारिका (गुजरात) और रामेश्वरम् (तमिलनाडु)। यह ओड़िशा राज्य के समुद्री तट पर बसा है। आज का ओड़िशा पहले उड़ीसा और प्राचीन काल में उत्कल प्रदेश के नाम से जाना जाता था। पुराणों में इसे धरती का बैकुंठ कहा गया है। इसे श्रीक्षेत्र, शंख क्षेत्र, श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरी और श्री जगन्नाथपुरी भी कहते हैं।

धार्मिक महत्व

स्कन्द पुराण में कहा गया है कि रथयात्रा में जो व्यक्ति श्री जगन्नाथ जी का नाम–कीर्तन करता हुआ गुंडिचा नगर तक जाता है, वह पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। जो व्यक्ति गुंडिचा मंडप में रथ पर विराजमान श्रीकृष्ण, बलराम और सुभद्रा के दर्शन दक्षिण दिशा को आते हुए करते हैं वे मोक्ष प्राप्त करते हैं। रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ चलकर जनता के बीच आते हैं। कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के समान होता है।

पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार राजा इन्द्रद्युम्न, जो सपरिवार नीलांचल सागर (ओड़िशा) के पास रहते थे, को समुद्र में एक विशाल लकड़ी का टुकड़ा तैरता हुआ दिखा। राजा ने इससे भगवान विष्णु का विग्रह बनाने का निर्णय किया। उसी समय देव शिल्पी विश्वकर्मा ने बढ़ई के रूप में आकर राजा की इच्छानुसार प्रतिमा के निर्माण का प्रस्ताव रखा। लेकिन उन्होंने एक शर्त रखी कि मैं जिस स्थान पर यह मूर्ति बनाऊँगा उस स्थान पर विग्रह तैयार हो जाने तक कोई प्रवेश ना करे।

महारानी को शंका हुई कि बढ़ई बिना कुछ खाए–पिए बंद कमरे में कैसे काम कर सकता है। महारानी ने अपनी शंका महाराज को बताते हुए कहा कि हमें देखना चाहिए कहीं वह मर तो नहीं गया। राजा ने सहमत होकर उस कमरे को खुलवाया तो बढ़ई उस स्थान पर नहीं मिला। केवल उसके द्वारा अर्द्ध निर्मित श्री जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम की मूर्तियाँ दिखीं। राजा और रानी विग्रह पूर्ण नहीं होने पर बहुत दुःखी थे। तभी आकाशवाणी हुई, 'व्यर्थ दुःखी मत हो, हम इसी रूप में रहना चाहते हैं, तुम इसे पवित्र जल से स्नान करा कर प्राण–प्रतिष्ठा करवा दो' राजा ने वैसा ही किया। आज भी वे ही मूर्तियाँ जगन्नाथपुरी के मंदिर में सुशोभित और प्रतिष्ठित हैं।

पर्यावरण का ध्यान रख किया जाता है रथों का निर्माण

पुरी में निकलने वाली रथयात्रा हेतु प्रतिवर्ष तीन अलग–अलग रथों का निर्माण होता है। रथ के लिए लकड़ियां बसंत पंचमी से इकट्ठी की जाती हैं। बनाने का कार्य अक्षया तृतीया से परम्परागत बढ़ई (खाती) करते हैं। रथ के लिए पूर्ण रूप से नई

मंदिर स्थित बलराम, देवी सुभद्रा व जगन्नाथ जी की काष्ठ प्रतिमाएं

लकड़ी काम में लेते हैं। रथ के निर्माण में लोहे की कील का प्रयोग वर्जित है। रथ के पहिये से लेकर शिखर तक 34 अलग-अलग हिस्से रहते हैं। तीनों रथों के निर्माण में 13 हजार क्यूबिक फीट नीम की लकड़ी एवं नारियल की लकड़ी का भी प्रयोग होता है। यह लकड़ी नयागढ़ व खोर्धा के क्षेत्रों में स्थित एक हजार पेड़ों को काटकर जुटाते हैं। हालांकि इसके लिए मंदिर प्रशासन की ओर से पर्यावरण का ध्यान रखते हुए दो गुने पौधे भी लगाए जाते हैं।

कैसे निकलती है रथ यात्रा

सर्वप्रथम मुख्य मंदिर के शिखर पर स्थित सुदर्शन चक्र को सुभद्रा जी के रथ पर पहुँचाया जाता है। उसके बाद गाजे-बाजे के साथ भगवान की मूर्तियों को रथों तक लाया जाता है, जिसे 'पोहण्डी बिजे' कहते हैं। जब तीनों प्रतिमायें रथों में विराजमान हो जाती हैं तब पुरी के राजा परम्परा का पालन करते हुए पालकी में आकर तीनों रथों की विधिवत पूजा कर सोने की झाड़ू से रथ मण्डप और रास्ते को साफ करते हैं। इसे 'छेरा पोहरा'कहते हैं। इसके बाद रथ यात्रा निकलती है। रथों को हजारों-लाखों भक्तगण खींचते हैं, जिसे 'रथटण'कहते हैं। पुरी से प्रारम्भ यह रथयात्रा गुंडिचा मंदिर पहुँचती है जहाँ 9 दिन के प्रवास के बाद दशमी तिथि से वापसी की यात्रा प्रारम्भ होती है जिसे स्थानीय भाषा में 'बहुडायात्रा' कहते हैं।

रथों का नामकरण

जगन्नाथ जी का रथ 'गरुड़ध्वज' या 'कपि ध्वज' कहलाता है। इसे 'नंदी घोष' के नाम से भी जाना जाता है। 16 पहियों वाला रथ 45.6 फीट उँचा होता है इसमें लाल व पीले रंग के कपड़े का प्रयोग होता है। रथ पर जो ध्वज है, उसे 'त्रैलोक्यमोहिनी' कहते हैं। बलभद्र के रथ को 'तालध्वज' कहा जाता है, जो यात्रा में सबसे आगे चलता है। इसमें लाल व हरे रंग के कपड़े का प्रयोग होता है। यह 45 फीट ऊँचा होता है। देवी सुभद्रा के रथ को 'देवदलन' या 'पदमरथ' कहा जाता है जो मध्य में चलता है। यह लाल व नीले रंग में दिखाई देता है। यह 44.6 फीट ऊँचा होता है। सबसे अंत में भगवान जगन्नाथजी का रथ चलता है।

रथयात्रा पर कोरोना महामारी का प्रभाव

कोरोना महामारी के कारण सुप्रीम कोर्ट ने पिछले वर्ष 23 जून, 2020 से होने वाली ऐतिहासिक वार्षिक रथयात्रा पर एक बार तो रोक लगा दी थी। चीफ जस्टिस एएस बोबड़े, जस्टिस दिनेश माहेश्वरी और जस्टिस एएस बोपन्ना की बेंच ने इस मामले की सुनवाई करते हुए कहा था कि जनहित और लोगों की सुरक्षा को देखते हुए इस वर्ष रथयात्रा की इजाजत नहीं दी जा सकती।

चीफ जस्टिस ने कहा,''यदि इस साल हमने रथ यात्रा की इजाजत दी तो भगवान जगन्नाथ हमें माफ नहीं करेंगे। महामारी के दौरान इतना बड़ा समागम नहीं हो सकता।'' बेंच ने ओड़िशा सरकार से ये भी कहा कि कोरोना को फैलने से रोकने के लिए राज्य में कहीं भी यात्रा व इससे जुड़ी गतिविधियों को इजाजत न दें। महामारी को देखते हुए एक एनजीओ 'ओड़िशा विकास परिषद्' ने यह याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर कर रोक लगाने की मांग की थी।

बाद में पुनर्विचार याचिकाओं पर सुनवाई के पश्चात् सुप्रीम कोर्ट ने यात्रा की अनुमति कुछ शर्तों के साथ दे दी। यह भी स्पष्ट किया कि पुरी के अलावा कहीं और यात्रा नहीं निकाली जायेगी। केन्द्र सरकार ने न्यायालय से सदियों पुरानी इस परम्परा को कुछ बदलाव के साथ जारी रखने की अनुमति देने हेतु अपील की थी। राज्य सरकार भी केन्द्र से सहमत थी। कम से कम 18 अन्य पुनर्विचार याचिकाएं न्यायालय में लगाई गई थी।

पुनर्विचार याचिकाकर्ता ने तर्क दिया था कि अगर भगवान जगन्नाथ तय समय पर यात्रा के लिए नहीं निकलेंगे तो परम्पराओं के अनुसार वह 12 वर्षों तक नहीं निकल सकते। यह रथ यात्रा 1736 से लगातार जारी है । मंदिर के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को ध्यान में रखते हुए सुप्रीम कोर्ट को पुनः सुनवाई करनी पड़ी। यात्रा में मंदिर समिति से जुड़े लोगों को ही शामिल होने की अनुमति न्यायालय द्वारा दी गई।

कोरोना और रथयात्रा - 2021

देश में फैली कोरोना की दूसरी लहर, व्हाइट और ब्लैक फंगस तथा लॉकडाउन के चलते इस बार भी यात्रा को कुछ शर्तों के साथ मंजूरी मिली है।

आस-पास के क्षेत्रों में धारा 144 लगा दी गई है। स्थानीय प्रशासन ने मंदिर प्रशासन से जुड़े पुजारियों, पुरोहितों और सेवकों की सूची तैयार कर सभी को कोविड का टीका लगाया है। यह विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा इस वर्ष भी बिना भक्तों के ही सम्पन्न की जाएगी। ●

प्रमुख मुस्लिम देश सऊदी अरब ने किया बड़ा फैसला

मस्जिदों में लाउडस्पीकर के प्रयोग पर लगाए कई प्रतिबन्ध

आवाज रखनी होगी धीमी

इस्लाम के सबसे पवित्र स्थल मक्का व मदीना जिस देश सऊदी अरब में हैं, वहां की सरकार द्वारा मस्जिदों में लगे लाउडस्पीकर के संबंध में कई प्रतिबंध लगाए गए हैं। संबंधित सरकारी आदेश में कहा गया है कि मस्जिद पर लाउडस्पीकर से निकलने वाली आवाज लाउडस्पीकर की अधिकतम आवाज की एक तिहाई से ज्यादा नहीं हो तथा इनका प्रयोग सिर्फ अजान एवं इकामत यानि नमाज के लिए लोगों को दूसरी बार पुकारने के लिए ही किया जाए। बताया जा रहा है कि आदेश में यह भी कहा गया कि अजान शुरू करने का संकेत देने के बाद लाउडस्पीकर को बंद कर देना चाहिए। सऊदी सरकार ने कहा है कि पूरी नमाज को लाउडस्पीकर पर सुनाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सऊदी अरब के इस्लामिक मामलों के मंत्री डॉ.अब्दुल लतीफ बिन अब्दुल्ला अजीज अल-शेख ने इस निर्णय के पीछे का कारण बताते हुए कहा कि जो लोग नमाज पढ़ना चाहते हैं वो मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर से अजान और इकामत का इंतजार नहीं करते। ऐसे लोग पहले ही मस्जिद पहुँच जाते हैं। मंत्री का कहना है कि (इस कारण से) मस्जिदों पर लाउडस्पीकर की जरूरत नहीं है।

बच्चों व बुजुर्गों की नींद में खलल

सऊदी अरब में लगभग 3.50 करोड़ की आबादी है। वहां 94 हजार मस्जिदें हैं जो अधिकतर रिहायशी इलाकों के पास हैं। अरब प्रशासन का कहना है कि यह मामला अत्यधिक शोर के बारे में की गई शिकायतों से प्रेरित है। काफी समय से लोगों की शिकायतें थी कि मस्जिदों पर लाउडस्पीकर के प्रयोग से बच्चों एवं बुजुर्गों की नींद खराब होती है, इसका उनके स्वास्थ्य पर असर पड़ता है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, सऊदी प्रशासन ने पाया था कि नमाज पढ़ते समय लाउडस्पीकर को पूरी आवाज पर रखा जा रहा था।

तेज आवाज से खतरे

मुस्लिम देश ईरान में किए गए एक अध्ययन के अनुसार

अजान की आवाज से सोना मुश्किल – कुलपति ने की शिकायत

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव ने प्रयागराज के जिलाधिकारी भानुचंद गोस्वामी से गत दिनों शिकायत की थी कि मस्जिद से दी जाने वाली अजान की आवाज के कारण वे सो नहीं पाती हैं। इस शिकायती पत्र की प्रति कमिश्नर, आईजी पुलिस और एसएसपी को भी भेजी। वीसी की चिट्ठी मिलने के बाद सरकारी अधिकारियों में हड़कंप मच गया। यह शायद इसलिए भी हुआ होगा क्योंकि प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव के पति गुजरात हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस हैं।

इस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने कुलपति के घर के नजदीक सिविल लाइंस की मस्जिद के लाउडस्पीकर की आवाज कम करवा दी। मस्जिद की देखरेख करने वाले मोहम्मद कलीम ने स्वीकार किया कि थाने से आये दरोगा ने अजान के दौरान लाउडस्पीकर की तेज आवाज से आसपास के क्षेत्रों के लोगों को परेशानी होने की बात बताई थी। इसके बाद आवाज धीमी कर दी गई।

बता दें कि प्रोफेसर संगीता श्रीवास्तव के बंगले से लगभग डेढ़ सौ से दो सौ मीटर की दूरी पर एक मस्जिद है। कानपुर रोड पर स्थित इस मस्जिद को लोग लाल मस्जिद के नाम से जानते हैं। मस्जिद की मीनार पर पहले चार लाउडस्पीकर थे। चारों का मुँह अलग-अलग दिशाओं में था।

लाउडस्पीकर्स की संख्या घटाकर दो कर दी गई तथा स्पीकर्स का मुंह वीसी के बंगले की तरफ से हटाकर दूसरी तरफ कर दिया गया। प्रश्न यह भी है कि इससे वीसी प्रोफेसर श्रीवास्तव को तो राहत मिल गयी, परन्तु लाउडस्पीकर का मुंह जिधर है, उधर के लोगों की नींद का क्या होगा?

मस्जिदों में लगे लाउडस्पीकर की आवाज 85 डेसीबल से 95 डेसीबल (आवाज को नापने की इकाई) तक होती है। (भारत में तो 110 डेसीबल या उससे ज्यादा होती है।)

एक शोध के अनुसार 70 डेसीबल से ऊँची आवाज मनुष्य के अंदर मानसिक बदलाव ला सकती है तथा शरीर की धमनियों में खून के प्रवाह को भी बढ़ा सकती है। इससे कई बार ब्लड प्रेशर ज्यादा हो जाता है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय का निर्णय

लाउडस्पीकर से अजान का अधिकार नहीं

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 15 मई, 2020 के अपने निर्णय में कहा है कि लाउडस्पीकर से (मस्जिद से) अजान देना इस्लाम का आवश्यक हिस्सा नहीं है।

गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) के जिलाधिकारी ने मस्जिदों से अजान देने पर रोक लगा दी थी। इस आदेश के विरूद्ध पूर्व केन्द्रीय मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद तथा बहुजन समाज पार्टी के सांसद अफजल अंसारी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत कर जिलाधिकारी के आदेश को संविधान में दिए गए 'धर्म स्वातंत्र्य' के मूल अधिकार (अनुच्छेद 25) का उल्लंघन बताते हुए रद्द करने का अनुरोध किया था।

उच्च न्यायालय की डबल बेंच के न्यायाधीश न्यायमूर्ति शशिकांत गुप्ता तथा न्यायमूर्ति अजित कुमार ने अपने निर्णय में याचिका को रद्द करते हुए कहा **'' अजान (देना) इस्लाम का एक आवश्यक एवं अभिन्न हिस्सा हो सकता है किन्तु इसे लाउडस्पीकर या किसी ध्वनिवर्धक उपकरण से दिया जाना संविधान के अनुच्छेद 25 के मौलिक अधिकारों के अंतर्गत (इस्लाम) मजहब का अभिन्न अंग नहीं कहा जा सकता।** अन्यथा भी इस अनुच्छेद का मौलिक अधिकार लोक व्यवस्था, नैतिकता, स्वास्थ्य या अन्य मौलिक अधिकारों के अधीन ही है।''

उन्होंने अपने निर्णय में लिखा–**''यह नहीं कहा जा सकता कि एक नागरिक को वह सुनने के लिए बाध्य किया जाए जिसे वह पसंद नहीं करता या जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है।'' और यह भी कहा, ''जब तक कि ध्वनि प्रदूषण नियमों के अंतर्गत संबंधित अधिकारी से स्वीकृति न ले ली जाए। किसी भी परिस्थिति में अजान किसी ध्वनिवर्धक उपकरण से नहीं दी जा सकती।''**

एक अन्य शोध के अनुसार यदि दो वर्ष तक लगातार 90 डेसीबल से ऊँची आवाज सुनी जाए तो इससे व्यक्ति की सुनने की शक्ति समाप्त हो सकती है। कई बार मरीज को लगता है कि उसके कानों में लगातार कोई आवाज गूंज रही है।

आलोचना करने वाले देश के दुश्मन

यद्यपि अरब की आम जनता ने इस आदेश का स्वागत किया है, परन्तु कई कट्टरपंथी तत्वों ने आलोचना शुरु कर दी है। इस पर इस्लामिक मामलों के मंत्री ने कहा है कि इस आदेश की आलोचना करने वाले सऊदी किंगडम (शाही शासन) के दुश्मन हैं। इस आदेश की आलोचना वे लोग कर रहे हैं जो घृणा भड़काना चाहते हैं ताकि समस्या पैदा हो। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार आदेश का पालन नहीं करने वालों पर जुर्माना लगाया जाएगा।

उदार देश बनाने का प्रयास

माना जा रहा है कि सऊदी अरब के शासक क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान अपने देश की रूढ़ीवादी छवि को समाप्त कर एक उदार देश बनाने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ माह पूर्व ही सऊदी अरब में महिलाओं के कार चलाने पर लगे प्रतिबंध को हटाया गया था। खेल व संगीत समारोह में अब महिला व पुरुष एक साथ शामिल हो सकते हैं।

इस्लाम धर्म को मानने वालों के अनुसार अजान और इकामत का मकसद लोगों को यह बताना होता है कि इमाम अपने स्थान पर बैठ चुके हैं और नमाज बस शुरू होने वाली है।

सऊदी अरब के इस्लामिक मामलों के मंत्रालय ने आदेश के संबंध में शरीयत की दलील भी दी है। जिसके अनुसार 'हर इंसान चुपचाप अपने रब को पुकार रहा है, इसलिए किसी दूसरे को परेशान नहीं करना चाहिए और ना ही पाठ में या प्रार्थना में दूसरे की आवाज पर आवाज उठानी चाहिए।''

अन्य देशों में भी ऐसे आदेश

विश्व के कई अन्य इस्लामिक देशों में भी मस्जिद पर लगे

इरफान खान और जफर सरेशवाला

लाउडस्पीकर के संबंध में ऐसे ही आदेश निकाले गए हैं।

दुबई में मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर का प्रयोग केवल शुक्रवार की नमाज के लिए या त्योहार के अवसर पर ही किया जा सकता है।

इंडोनेशिया में 2015 के आदेश द्वारा मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर की आवाज कम रखने तथा इसका प्रयोग केवल अजान के लिए करने तक सीमित कर दिया गया था।

नाइजीरिया में 2019 के आदेश द्वारा मस्जिद व चर्च पर लाउडस्पीकर के उपयोग को पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया गया। **पाकिस्तान के पंजाब प्रांत** की सरकार ने 2015 के आदेश में मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर की आवाज कम रखने तथा इसका उपयोग केवल अजान हेतु करने को कहा।

रात को बंद रहेंगे लाउडस्पीकर

कर्नाटक राज्य वक्फ बोर्ड ने दरगाहों व मस्जिदों पर चलने वाले लाउडस्पीकर को लेकर सर्कुलर जारी किया है । इसमें ध्वनि प्रदूषण पर लगाम के लिए रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक मस्जिदों में लाउडस्पीकर के उपयोग पर रोक लगा दी है। दिन में तय मानकों के हिसाब से लाउडस्पीकर बजेंगे। उल्लंघन पर जुर्माना लगाया जाएगा।

भारत की स्थिति

माना जाता है कि भारत में लगभग 3 लाख मस्जिदें हैं। लगभग सभी मस्जिदों पर लाउडस्पीकर लगे हुए हैं। जिन पर अजान एवं इकामत देने के साथ ही पूरी नमाज भी पढ़ी जाती है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने माना है कि मस्जिद से लाउडस्पीकर द्वारा अजान देना इस्लाम का आवश्यक अंग नहीं है। मद्रास उच्च न्यायालय ने भी कहा है कि जो लोग आवाज नहीं सुनना चाहते हैं उन्हें सुनने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता तथा यह भी कि, मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकर की आवाज कम होनी चाहिए।

पिछले दिनों केरल से आए एक समाचार के अनुसार मुस्लिम बहुल मल्लपुरम में कुछ मस्जिदों ने अजान के लिए अपनी मर्जी से लाउडस्पीकरों का उपयोग बंद कर दिया है ताकि, स्थानीय लोगों, विशेषकर गैर मुसलमानों को परेशानी न हो। यह एक अच्छी पहल है। प्रयागराज में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति की शिकायत पर उनके घर के पास की मस्जिद से चार में से दो लाउडस्पीकर हटा लिए गए तथा आवाज धीमी कर दी गई।

परन्तु एकाध उदाहरणों से कुछ होने वाला नहीं है। सऊदी अरब के आदेश से यह तो सिद्ध हो गया कि लाउडस्पीकर से अजान देना बहुत जरूरी नहीं है यानि इस्लामिक परंपराओं का हिस्सा नहीं है।

सोनू निगम एवं इरफान

2017 में गायक सोनू निगम ने ट्वीट किया था– 'मैं मुसलमान नहीं हूँ, पर मुझे सुबह अजान की वजह से जागना पड़ता है। भारत में धार्मिकता को इस तरह थोपना कब बंद होगा?'' इस पर बड़ा विवाद हुआ था। अभिनेता इरफान खान का कहना था कि इस्लाम के स्वरूप और उसकी पद्धतियों के बारे में आत्ममंथन की आवश्यकता है तथा इस्लाम का सुधारवादी एवं मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत स्वरूप सामने रखना होगा। मौलाना आजाद विश्वविद्यालय के कुलपति जफर सरेशवाला ने इरफान का समर्थन करते हुए कुरान की उन आयतों का उल्लेख किया जिनमें अल्लाह कह रहे हैं कि तुम्हारा दिया गया गोश्त व खून मुझ तक नहीं पहुँचता, मुझ तक तुम्हारे दिल के जज्बात पहुँचते हैं।

जहां तक मस्जिदों पर लगे लाउड–स्पीकरों का संबंध है, क्या भारत का मुस्लिम समाज इलाहाबाद तथा मद्रास उच्च न्यायालय के निर्णयों के प्रकाश में, सऊदी अरब तथा अन्य मुस्लिम देशों का अनुसरण करते हुए मस्जिदों पर लगे लाउडस्पीकरों की संख्या घटाने तथा आवाज को क्षमता से एक तिहाई तक ही रखने का निर्णय लेगा? ●

सादा जीवन उच्च विचार के समर्थक रज्जू भैया

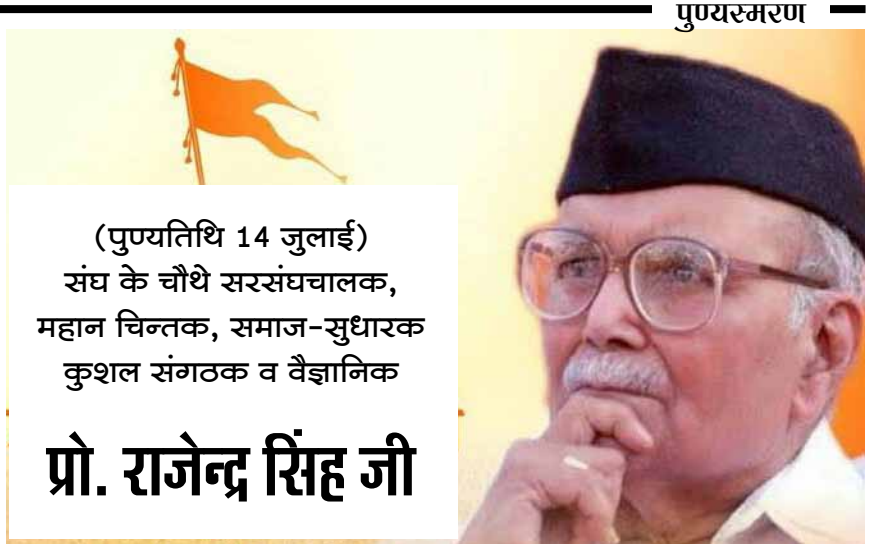

(पुण्यतिथि 14 जुलाई)
संघ के चौथे सरसंघचालक,
महान चिन्तक, समाज-सुधारक
कुशल संगठक व वैज्ञानिक

प्रो. राजेन्द्र सिंह जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चौथे सरसंघचालक रहे प्रो. राजेन्द्र सिंह का जन्म बनैल गाँव में 29 जनवरी, 1922 को हुआ था। यह गाँव उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर में स्थित है। आपको सर्वसाधारण से लेकर संघ परिवार तक सभी जगह 'रज्जू भैया' के नाम से ही जाना जाता है। आपके पिता का नाम कुंवर बलबीर सिंह तथा माता का नाम श्रीमती ज्वाला देवी था। पिता अंग्रेजी शासन में पहले भारतीय मुख्य अभियंता (चीफ इंजीनियर) थे। आपने प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण कर प्रयाग विश्वविद्यालय से स्नातक किया। इसी विश्वविद्यालय से आपने भौतिक विज्ञान में एमएससी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की।

एमएससी की अंतिम प्रायोगिक परीक्षा लेने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिक सी. वी. रमन विश्वविद्यालय आये थे। सी.वी. रमन के एक प्रश्न का जब कोई भी छात्र जवाब नहीं दे पाया तो राजेन्द्र सिंह ने उस प्रश्न का सटीक और तार्किक उत्तर देकर वैज्ञानिक रमन का दिल जीत लिया। रमन ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें बैंगलोर चलकर शोध सहायक के रूप में कार्य करने का निमंत्रण दिया। रज्जू भैया उन दिनों संघ के कार्यकर्ता के रूप में अपने जीवन को एक अलग दिशा दे चुके थे। अतः उन्होंने सी.वी. रमन के प्रस्ताव को बड़ी विनम्रता से अस्वीकार कर दिया।

रज्जू भैया की संघ शाखाओं में रूचि बढ़ने लगी थी। इन्ही दिनों (सन् 1943) काशी में संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन हुआ। यहीं से आपने संघ के प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण लिया। वर्ग में संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्रीगुरुजी के 'शिवाजी का जयसिंह के नाम पत्र' विषय पर दिये गये भाषण से रज्जू भैया बहुत प्रभावित हुए। इस बौद्धिक ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। वे संघ के एक पूर्ण समर्पित स्वयंसेवक बन गये। अब रज्जू भैया अध्यापन कार्य के अतिरिक्त शेष सारा समय संघ कार्य में लगाने लगे।

रज्जू भैया सादा जीवन उच्च विचार के प्रबल समर्थक थे। वे हमेशा तृतीय श्रेणी में ही प्रवास करते थे। प्रवास का सारा खर्च भी अपनी जेब से ही करते थे। प्रवास के बाद जो पैसा बचता उससे वह विश्वविद्यालय के निर्धन छात्रों की फीस और पुस्तकों पर खर्च कर दिया करते थे। सन् 1966 में रज्जू भैया को उत्तर प्रदेश और बिहार का संघ का दायित्व दिया गया। दायित्व मिलते ही उन्होंने विश्वविद्यालय की नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। आपकी योग्यता के कारण क्रमशः आपका कार्य क्षेत्र बढ़ता चला गया।

आपातकाल के दौरान जब संघ पर प्रतिबंध लगा तब रज्जू भैया उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रचारक थे। उस समय भूमिगत रहकर प्रो. गौरव कुमार के नाम से पूरे देश में घूम-घूम कर उन्होंने स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन किया। असामान्य प्रतिभा और कुशल संगठन क्षमता के कारण उन्हें सन् 1977 में सह सरकार्यवाह तथा 1978 में सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया। उक्त पद पर रहते हुए आपने देशभर में प्रवास कर स्वयंसेवकों को संघ कार्य विस्तार की प्रेरणा दी।

1994 में तृतीय सरसंघचालक पू. बाला साहब देवरस ने अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण जब अपना उत्तराधिकारी खोजना शुरू किया तो सभी की निगाहें रज्जू भैया पर ठहर गयीं और 11 मार्च,1994 को बाला साहब ने उन्हें सरसंघचालक का दायित्व सौंप दिया। संघ के इतिहास में यह एक असामान्य घटना थी जब किसी सरसंघचालक ने अपने जीवन काल में ही किसी अन्य को सरसंघचालक का दायित्व सौंप दिया था। सरसंघचालक के शीर्षस्थ दायित्व का निर्वाह करते हुए आपने कई बार पूरे देश की परिक्रमा की। आपने संघ कार्य के विस्तार की दृष्टि से यूरोप, ब्रिटेन, अमरीका तथा दक्षिण पूर्व एशिया की भी यात्रा की।

खराब स्वास्थ्य के चलते 10 मार्च, 2000 को अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में आपने श्री केएस सुदर्शन जी को पांचवें सरसंघचालक का दायित्व सौंपा। अंतिम समय तक सक्रिय रहते हुए 14 जुलाई, 2003 को पूणे स्थित कौशिक आश्रम में रज्जू भैया ने अंतिम सांस ली। ■

प्रकृति विरुद्ध आचरण के कारण ही संकट- निंबाराम

रा.स्व.संघ के राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम ने कहा है कि प्रकृति विरुद्ध आचरण करने के कारण ही हमें कई सारे संकटों का सामना करना पड़ा है। उन्होंने पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर झुंझुनू जिले के जसरापुर स्थित केशव गोशाला में वृक्षारोपण करने के बाद कहा कि यदि हमें इन संकटों से बचना है तो वृक्षारोपण करें जिससे पर्यावरण शुद्ध हो एवं जल संकट भी दूर हो सके।

झुन्झुनू स्थित संघ कार्यालय (आहुति भवन) में श्री निंबाराम ने मंत्रोच्चारण के साथ प्रकृति पूजन तथा पौधारोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रारम्भिक काल से ही हमारी संस्कृति प्रकृति पूजन की रही है। पर्यावरण के प्रत्येक घटक को पूजनीय बताया गया है, फिर चाहे वे पेड़-पौधे हों, या नदियां व समुद्र। वेदों में वृक्ष पूजन का पूरा विज्ञान है। वृक्ष हैं तो हम हैं, वृक्ष हैं तो सृष्टि है। श्री निंबाराम ने आह्वान किया सभी पौधारोपण का पवित्र कार्य करें तथा उसकी संभाल हो यह भी सुनिश्चित करें।

झुंझुनू में जसरापुर स्थित केशव गोशाला में वृक्षारोपण करते क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम साथ में विभाग गोसेवा प्रमुख मुकेशानंद, विभाग प्रचारक सतीश, सह विभाग प्रचारक जब्बर सिंह एवं श्रीकांत पंसारी

पर्यावरण संरक्षण गतिविधि

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पर्यावरण गतिविधि के तत्वावधान में देश भर में 5 जून को पौधारोपण का कार्यक्रम बड़े स्तर पर किया गया। इस हेतु हजारों की संख्या में गिलोय, नीम, पीपल, बरगद, सहजन, खेजड़ी आदि पौधों का वितरण किया गया था। **संघ पर्यावरण संरक्षण गतिविधि में तीन बिंदुओं पर कार्य कर रहा है-1. अधिकतम वृक्षारोपण, 2. जल संरक्षण तथा 3. प्लास्टिक मुक्त भारत।**

अपना संस्थान द्वारा पर्यावरण संरक्षण-संवर्धन

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत संगठन 'अपना' संस्थान से जुड़े लोग कई नवाचार कर रहे हैं। इसके द्वारा रसोई की बगिया, इको-ब्रिक्स व पक्षी आवास जैसे कई प्रयोग किए गए हैं।

रसोई की बगिया

घर की रसोई से निकलने वाले 'वेस्ट' को सूक्ष्म प्लांट लगाकर उपयोगी बनाया जा रहा है। प्लांट में 13 प्रकार के औषधीय व सुगंध वाले पौधे लगाकर घर की छत पर बगिया बनाने का यह प्रयास अब तक लगभग सात सौ परिवारों में शुरु किया जा चुका है।

पॉलिथिन से इको ब्रिक्स

बाजार से सामग्री लाने पर मिलने वाली पॉलिथिन को उपयोग के पश्चात् प्लास्टिक की बोतलों के अंदर भरा जाता है। इन बोतलों का उपयोग ईंटों की जगह निर्माण कार्य में किया जा रहा है। इसीलिए इन्हें 'इको ब्रिक्स' नाम दिया गया है। अपना संस्थान के मीडिया प्रभारी विवेकानन्द शर्मा ने बताया कि इको ब्रिक्स का भवन निर्माण में प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है।

संघ द्वारा अपना संस्थान के माध्यम से 2015 से वृक्षारोपण के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत अभी तक एक लाख से ज्यादा वृक्ष अकेले बाड़मेर जिले में लगाये गए हैं। इस वर्ष बाड़मेर जिले के 11 हजार परिवारों ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत पौधारोपण किया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार फलौदी जिले में पिछले एक वर्ष में 60 हजार पौधारोपण कर पर्यावरण को बढ़ावा दिया गया है।

स्वामी विवेकानन्द विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय, बारां में पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करने हेतु कई प्रतियोगिताएं रखी गईं तथा **'हर घर एक वृक्ष'** लगाने एवं लगवाने का संकल्प करवाया। गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ पौधारोपण कर प्रकृति पूजन भी किया गया।

भारत विकास परिषद की जयपुर महानगर शाखा द्वारा वेबीनार के माध्यम से **'अपना बगीचा'** वार्ता का आयोजन किया गया। श्रीमती श्वेता पाराशर ने बताया कि कम जगह में किस तरह छोटे पौधे लगा सकते हैं।

राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद द्वारा संचालित छात्रावास कोटड़ा में भी पौधारोपण किया गया। पाकिस्तान से लगती राजस्थान की सीमा के क्षेत्र में संघ स्वयंसेवकों के प्रयास से हजारों परिवारों ने प्रकृति पूजन कर पौधारोपण किया। ●

बलिदान दिवस 22 जून

अमर शहीद सेठ अमरचंद बांठिया

अमरचंद बांठिया का जन्म राजस्थान के बीकानेर में 1793 में हुआ था। पिता के व्यावसायिक घाटे से निपटने के लिए बांठिया परिवार ग्वालियर के सराफा बाजार में आकर बस गया। अमरचंद की कर्त्तव्यपरायणता, ईमानदारी व मेहनती स्वभाव के कारण ग्वालियर के तत्कालीन शासक महाराज सिंधिया ने उन्हें राजकोष का कोषाध्यक्ष बना दिया था।

1857 का स्वातंत्र्य समर आरम्भ हो चुका था। एक अधिकारी ने एक दिन जैन मत के अनुयायी अमरचंद बांठिया से कहा, ''भारत माता को दासता से मुक्त कराने के लिए अब तो आपको भी अहिंसा छोड़कर शस्त्र उठा लेना चाहिए।'' बांठिया ने कहा कि भाई मैं अपनी शारीरिक विषमताओं के कारण हथियार तो नहीं उठा सकता, किन्तु समय आने पर देश के लिए जरूर अपना योगदान दूंगा।''

वह समय आ गया था। रानी लक्ष्मीबाई, उनके सेनानायक राव साहब और तात्या टोपे आदि क्रांतिवीर ग्वालियर के रणक्षेत्र में अंग्रेजों के विरूद्ध डटे हुए थे। उस समय लक्ष्मीबाई के सैनिकों को कई माह से न तो वेतन मिला था और न ही उनके लिए राशन-पानी की पर्याप्त व्यवस्था हो पा रही थी।

2 जून, 1858 को लक्ष्मीबाई के सेनापति राव साहब ने अमरचंद बांठिया से आर्थिक सहयोग मांगा। तत्कालीन ग्वालियर शासक सिंधिया अंग्रेजों के मित्र थे, ऐसी परिस्थिति में भी बांठिया जी ने देश हित में निर्णय लेकर राजकोष राव साहब के सुपुर्द कर दिया। इस कोष के मिलने से सैनिकों को 5-5 माह का वेतन दिया जा सका। सेना की अन्य आवश्यकताएं भी पूरी हो सकी। अमरचंद बांठिया का इस कदम का सीधा सा अर्थ था अपने जीवन को संकट में डालना। और, हुआ भी यही।

अमरचंद बांठिया से प्राप्त सहायता से क्रांतिकारी सेना के हौसले बढ़ गए थे। लक्ष्मीबाई की सेना ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। परन्तु अंग्रेज सेनानायक ह्यूरोज ने 16 जून को पूरी शक्ति से क्रांतिसेना पर हमला कर दिया। भीषण युद्ध हुआ। दुर्भाग्यवश लक्ष्मीबाई लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। ग्वालियर पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।

अंग्रेजी सेना ने अमरचंद बांठिया को बंदी बना लिया। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। न्याय करने का ढोंग रचते हुए ब्रिगेडियर नैपियर ने उन्हें फांसी की सजा सुनाई। 22 जून, 1858 को ग्वालियर के भीड़ भरे सराफा बाजार में नीम के पेड़ पर लटकाकर बांठिया जी को फांसी दे दी गई। उनका शव 3 दिन तक लटकाए रखा गया।

बीकानेर (राजस्थान) के सपूत ने अपनी कर्म-स्थली ग्वालियर में देश के लिए अपनी जान दे दी थी। ग्वालियर के सराफा बाजार में वह नीम का पेड़ आज भी ठूंठ के रूप में हैं जिसके नीचे अमरचंद बांठिया की एक मूर्ति लगायी गयी है। ●

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइये। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य–यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. महाराजा दशरथ के निधन के समय भरत और शत्रुघ्न कहाँ थे?
2. इंद्रप्रस्थ में पाण्डवों ने कौन सा प्रसिद्ध यज्ञ किया था?
3. चौथी शताब्दी में 25 दिसम्बर को यूरोप में कौन सा पर्व आता था और उस दिन किसकी पूजा होती थी?
4. श्रीराम वनवास के समय पंचवटी में काफी समय रहे थे। किस पवित्र नदी के किनारे यह स्थान है?
5. हमारे देश में दिशाओं की संख्या कितनी मानी जाती है?
6. सम्राट विक्रमादित्य के बाद बचे हुए शकों को भारत से किसने मार भगाया?
7. परमाणु विज्ञान के सिद्धान्त समझाने वाले भारतीय ऋषि कौन थे?
8. 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर में क्रांति का संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे पहुँचाया गया?
9. सम्राट पृथ्वीराज चौहान के परम प्रिय मित्र एवं भाट-कवि का नाम बतायें?
10. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले का जन्म किस स्थान पर हुआ?

(उत्तर पृष्ठ क्र.14 पर)

हिसाब भगवान रखते हैं

अस्पताल में एक कोरोना का केस आया। मरीज की हालत गंभीर थी। अस्पताल के मालिक डॉक्टर ने तत्काल खुद जाकर आईसीयू में केस की जांच की। दो-तीन घंटे के ऑपरेशन के बाद डॉक्टर बाहर आया और अपने स्टाफ को कहा कि इस व्यक्ति को किसी प्रकार की कमी या कष्ट ना हो। उससे इलाज व दवा के पैसे न लेने के लिए भी कहा।

मरीज लगभग 15 दिन तक अस्पताल में रहा। जब बिल्कुल ठीक हो गया और उसको डिस्चार्ज करने का दिन आया तो उस मरीज का लगभग ढाई लाख रुपये का बिल अस्पताल के मालिक उस डॉक्टर की टेबल पर आया। डॉक्टर ने अपने अकाउंट मैनेजर को बुलाकर कहा ...''इस व्यक्ति से एक पैसा भी नहीं लेना है। ऐसा करो तुम उस मरीज को लेकर मेरे चेंबर में आओ।''

मरीज को व्हीलचेयर पर चेंबर में लाया गया। डॉक्टर ने मरीज से पूछा - ''भाई, क्या आप मुझे पहचानते हो? मरीज ने कहा लगता तो है कि मैंने आपको कहीं देखा है।''

डॉक्टर ने कहा ...''याद करो, लगभग दो साल पहले सूर्यास्त के समय शहर से दूर उस जंगल में तुमने एक गाड़ी ठीक की थी। उस रोज मैं परिवार सहित पिकनिक मनाकर

डॉक्टर ने अपने अकाउंट मैनेजर को बुलाकर कहा ...''इस व्यक्ति से एक पैसा भी नहीं लेना है। ऐसा करो तुम उस मरीज को लेकर मेरे चेंबर में आओ।''

लौट रहा था कि अचानक कार में से धुआं निकलने लगा और गाड़ी बंद हो गई। अंधेरा थोड़ा-थोड़ा घिरने लगा था। चारों ओर सुनसान जंगल था। परिवार के हर सदस्य के चेहरे पर चिंता और भय की लकीरें दिखने लगी थीं और सब भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि कोई सहायता मिल जाए।''

थोड़ी ही देर में चमत्कार हुआ। बाइक से तुम आते दिखाई दिए। हम सब ने हाथ ऊंचा करके तुमको रुकने का इशारा किया। तुमने बाईक खड़ी कर हमारी परेशानी का कारण पूछा। कार का बोनट खोलकर चेक किया और कुछ ही क्षणों में कार चालू कर दी।

हम सबके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। हमको लगा जैसे भगवान ने तुम्हें हमारे पास भेजा है क्योंकि उस सुनसान जंगल में रात गुजारने के ख्याल मात्र से ही हमारे रोंगटे खड़े हो रहे थे। तुमने बताया था कि तुम एक गैराज चलाते हो।

मैंने तुम्हारा आभार जताते हुए कहा था, ''तुमने ऐसे कठिन समय में हमारी सहायता की, इस सहायता का कोई मूल्य नहीं है, यह अमूल्य है परंतु फिर भी मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम्हें कितने पैसे दूँ?''

उस समय तुमने मेरे आगे हाथ जोड़कर जो शब्द कहे थे, वह शब्द मेरे जीवन की प्रेरणा बन गये। तुमने कहा था, ''मेरा नियम और सिद्धांत है कि मैं मुश्किल में पड़े व्यक्ति की सहायता के बदले कभी कुछ नहीं लेता। मेरी इस मजदूरी का हिसाब भगवान रखते हैं।''

उसी दिन मैंने सोचा कि जब एक सामान्य आय का व्यक्ति इस प्रकार के उच्च विचार रख सकता है और उनका संकल्प पूर्वक पालन कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता। मैंने भी अपने जीवन में यही संकल्प ले लिया है। दो साल हो गए हैं, मुझे कभी कोई कमी नहीं पड़ी, बल्कि पहले से भी अधिक मिल रहा है।

अस्पताल मेरा है। तुम यहां मेरे मेहमान हो। तुम्हारे ही बताए हुए नियम के अनुसार मैं तुमसे कुछ भी नहीं ले सकता।

उस समय तुमने मेरे आगे हाथ जोड़कर जो शब्द कहे थे, वह शब्द मेरे जीवन की प्रेरणा बन गये। तुमने कहा था, ''मेरा नियम और सिद्धांत है कि मैं मुश्किल में पड़े व्यक्ति की सहायता के बदले कभी कुछ नहीं लेता।

''ये तो भगवान की कृपा है कि उसने मुझे ऐसी प्रेरणा देने वाले व्यक्ति की सेवा करने का मौका दिया।

डॉक्टर ने मरीज से कहा, ''तुम आराम से घर जाओ, और कभी भी कोई तकलीफ हो तो बिना संकोच के मेरे पास आ सकते हो।''

मरीज ने जाते हुए चेंबर में रखी भगवान कृष्ण की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर कहा, ''हे प्रभु ! आपने आज मेरे कर्म का पूरा हिसाब ब्याज समेत चुका दिया।''

सदैव याद रखें कि आपके द्वारा किये गए कर्म आपके पास लौट कर आते है। और वो भी ब्याज समेत।

वर्तमान में कठिन समय चल रहा है। जितना हो सकता है लोगों की सहायता करें। आपका हिसाब ब्याज समेत वापस आएगा। ●

योग भारतीय परम्परा का अमूल्य उपहार

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2015 से प्रतिवर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की। विश्व के अधिकांश देशों में इस दिन योग संबंधी सामूहिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। 21 जून वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' मनाने के प्रस्ताव को स्वीकृति मिली।

योग से स्वस्थ रहकर आनंद का अनुभव होता है- सुरेश भैय्या जी

पिछले दिनों वर्चुअली आयोजित एक योग शिविर के समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के पूर्व सरकार्यवाह तथा वर्तमान में अ.भा.कार्यकारिणी सदस्य श्री सुरेश भैय्याजी जोशी ने कहा कि भारत के मनीषियों ने चिंतन और प्रयोग करते हुए एक **अष्टांग** योग पद्धति का विकास किया। योग से मनुष्य जीवन भर स्वस्थ रहते हुए आनंद का अनुभव करता है।

श्री भैय्या जी ने कहा कि शरीर की आंतरिक रचना में नाड़ी संस्थान है। उसका ठीक से संचालन रखने के लिए आसन पर्याप्त नहीं है। इसके लिए नित्य प्राणायाम और श्वसन से जुड़े व्यायाम आवश्यक हैं। इसलिए जब आसन और प्राणायाम दोनों होते हैं तो शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है। इसके आगे पंचकोष में मन और आत्मा की बात कही गई है।

यह सात दिवसीय योग शिविर रा.स्व.संघ(जयपुर प्रांत), क्रीड़ा भारती एवं विभिन्न योग संगठनों की ओर से वर्चुअली आयोजित किया गया था।

क्रीड़ा भारती के राजस्थान प्रदेश संयोजक मेघ सिंह ने बताया कि यू ट्यूब चैनल के माध्यम से प्रतिदिन 12 हजार परिवारों में योगाभ्यास किया गया। फेसबुक पर भी हजारों की संख्या में योग के लिए लोग जुड़े।

योग शिविर में कुलभूषण बैराठी (पतंजलि योग), सीमा शर्मा (गायत्री परिवार), दीपक मिश्रा (आर्ट ऑफ लिविंग), उमेश व हेमलता शर्मा (योगस्थली सोसाइटी), शेखर व्यास (एस.व्यासा), रमाकांत मिश्रा (राजस्थान विश्वविद्यालय), रश्मि शर्मा (योग भवन), ढाकाराम योगाचार्य एवं कविता जैन आदि का विशेष सहयोग रहा।

कुछ उपयोगी योगासन

मेघ सिंह चौहान

योगासन शरीर और मन को स्वस्थ रखने की क्रियाएं हैं। कई रोगों को ठीक करने में योगासन उपयोगी माने गए हैं। यहाँ कुछ ऐसे ही उपयोगी योगासनों को करने की विधि, उनसे होने वाला लाभ तथा सावधानियों का सचित्र वर्णन किया गया है।

ताड़ासन

पैर और कमर को सीधा करके खड़े हो जाएं, एड़ियों को एक दूसरे से मिला कर रखें, अपने दोनों हाथों को बगल में सीधा रखें। हथेलियों को आपस में फंसाकर ऊपर उठाएं। हथेलियों की दिशा आकाश की तरफ होनी चाहिए। धीरे-धीरे सांस लेते हुए, पंजों के बल खड़े होते हुए शरीर को ऊपर की ओर खींचें। जब शरीर पूरी तरह तन जाए, तो इस मुद्रा में कुछ देर बने रहने की कोशिश करें। साथ ही सामान्य रूप से सांस लेते रहें। इस अवस्था में शरीर का पूरा भार पंजों पर होगा। फिर सांस को धीरे-धीरे छोड़ते हुए प्रारंभिक अवस्था में आ जाएं।

लाभ – वजन कम करने, लंबाई, शरीर संतुलन व एकाग्रता बढ़ाने में उपयोगी। पैरों को मजबूत कर सायटिका, कमर व घुटनों के दर्द को ठीक करता है तथा फेफड़ों का विस्तार होने से शरीर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाता है।

पादहस्तासन

सीधे खड़े हो जाएं और दोनों हाथ शरीर के साइड से लगे हुए। सांस को भीतर खींचते हुए दोनों हाथों को ऊपर की तरफ उठायें । श्वास को छोड़ते हुए, कमर को मोड़ते हुए आगे की तरफ झुकें। अपने हाथों को पैर के पंजे के पास लेकर जाने का प्रयास करें। इसी स्थिति में 15-30 सेकेंड तक स्थिर बने रहें। धीरे-धीरे ऊपर की तरफ उठें और सामान्य होकर खड़े हो जाएं।

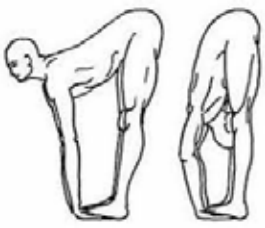

लाभ – मस्तिष्क को शांत कर तनाव व डिप्रेशन को कम करता है। जिगर व गुर्दों की मालिश होती है। जाँघों, पिंडली व कुल्हों को मजबूती प्रदान कर पाचन में सुधार लाता है।

वक्रासन

पांवों को फैलाकर जमीन पर बैठें। ध्यान रहे दोनों पैरों के बीच दूरी न हो। बाएं पांव को घुटने से मोड़ें और इसको उठा कर दाएं घुटने के

बगल में रखें। रीढ़ की हड्डी को सीधा रखें तथा सांस छोड़ते हुए कमर को बाईं ओर मोड़ें। अब हाथ की कोहनी से बाएं पैर के घुटने को दबाव के साथ अपनी ओर खींचें। सांस छोड़ते हुए प्रारंभिक अवस्था में आएं। यही अभ्यास दूसरी ओर से दोहराएं।

लाभ– मधुमेह अर्थात् डायबिटीज के लिये सर्वोत्तम आसन है। पेट की चर्बी कम कर रीढ़ की हड्डी, कंधों तथा हाथों को मजबूती प्रदान करता है।

पश्चिमोतानासन

सबसे पहले दोनों पैरों को सामने की ओर फैलाते हुए जमीन पर बैठ जाएं। दोनों

पैर आपस में मिलाकर रखें। श्वास लें, अपनी बाहों को ऊपर उठाएं और जहां तक संभव हो शरीर को आगे की ओर झुकायें। आगे की ओर झुकते समय साँस छोड़े। अंतिम चरण में, दोनों हाथों से पैरों के तलवे को और नाक को घुटनों से छुएं। श्वास लें और मूल स्थिति में आएं।

लाभ – कमर लचीली होती है, रीढ़ की हड्डी का पूरा व्यायाम होता है। पेनक्रियाज सक्रिय होता है। पेट, मोटापा,तनाव, अनिद्रा आदि कम होते हैं, सायटिका व बवासीर के रोगियों को लाभ होता है।

अर्द्ध हलासन

पीठ के बल लेट जाएं और हाथों को जांघों के निकट टिका लें। अब आप धीरे–

धीरे अपने पांवों को मोड़े बगैर पहले 30 डिग्री पर, फिर 60 डिग्री पर और उसके बाद 90 डिग्री पर उठाएं। धीरे–धीरे सांस लें और धीरे–धीरे सांस छोड़ें। फिर धीरे–धीरे मूल अवस्था में आएं।

लाभ – पाचन तंत्र को मजबूत करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, रीढ़ की हड्डी का व्यायाम होता है। थायरॉइड, सिरदर्द, गले व कब्ज के रोगों में लाभ के साथ ही चेहरे की सुन्दरता बढ़ाता है।

भुजंगासन

पेट के बल जमीन पर लेट जाएं। अपनी दोनों हथेलियों को जांघों के पास जमीन की तरफ करके रखें। ध्यान रखें कि आपके टखने एक–दूसरे को छूते रहें। अपने दोनों हाथों को कंधे के बराबर लेकर आएं और दोनों हथेलियों को फर्श की तरफ करें।

अपने शरीर का वजन अपनी हथेलियों पर डालें, सांस भीतर खींचें और अपने सिर को उठाकर पीठ की तरफ खींचें। साथ ही अपनी छाती को भी आगे की तरफ निकालें। सिर को सांप के फन की तरह खींचकर रखें।

सांस की गति सामान्य बनाए रखें। धीरे–धीरे अपने हाथों को वापस साइड पर लेकर आएं। अपने सिर को फर्श पर विश्राम दें। अपने हाथों को सिर के नीचे रखें। बाद में धीरे से अपने सिर को एक तरफ मोड़ लें और धीमी गति से दो मिनट तक सांस लें।

लाभ – रीढ़ की हड्डी में लचीलापन बढ़ता है, पाचन, मलमूत्र, व मेटाबॉलिज्म संबधी रोगो में लाभ, फेफड़ों व हार्ट की नसों के ब्लॉकेज खुलते हैं, साइटिका व अस्थमा में भी लाभकारी है।

सावधानियां :– योगासन शौच क्रिया से निवृत्त होने के बाद ही किया जाना चाहिए। योगासन खुले एवं हवादार जगह पर करना चाहिए, ताकि श्वास के साथ आप स्वतंत्र रूप से शुद्ध वायु ले सकें । आसन करते समय अनावश्यक जोर न लगाएं, आप अपने सामर्थ्य के अनुसार ही अभ्यास करें। प्रारम्भ में आप अपनी मांसपेशियों को कड़ी पाएंगे, लेकिन कुछ ही सप्ताह के नियमित अभ्यास से शरीर लचीला हो जाता है। मासिक धर्म, गर्भावस्था, गंभीर रोग जैसे– हार्ट प्रॉब्लम आदि के दौरान आसन न करें। आसन के प्रारंभ और अंत में विश्राम करें एवं अभ्यास के पश्चात् शरीर में आये हुए परिवर्तनों को महसूस करें । आसन विधिपूर्वक ही करें। प्रत्येक आसन दोनों ओर से करें एवं उसका पूरक अभ्यास करें । 8 वर्ष से कम उम्र वाले अभ्यास न करे। योग आसन करने से पूर्व सूक्ष्म व्यायाम करना आवश्यक है। इससे अंगों की जकड़न समाप्त होती है तथा आसनों के लिए शरीर तैयार होता है। ●

– प्रदेश संयोजक, क्रीड़ा भारती,राजस्थान

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी – 1. कैकय में नाना के घर 2. राजसूय यज्ञ 3. मकर संक्रांति तथा सूर्य–पूजा 4. गोदावरी 5. दस 6. सम्राट शालिवाहन 7. महर्षि कणाद 8. रक्त कमल और रोटी से 9. चन्दबरदाई 10. होसबाले गाँव (कर्नाटक)

नाबालिग के साथ पहले दुष्कर्म किया फिर मतांतरण का प्रयास

समाज में बालिकाओं के शोषण की घटनाएं निरंतर बढ़ रही हैं। इन घटनाओं में जबरन धर्म परिवर्तन करवाने और मासूम हिन्दू बालिकाओं के साथ यौन अपराध चिंता का विषय है।

कामखेड़ा थाना क्षेत्र (झालावाड़) की 17 वर्षीय नाबालिग ने शादीशुदा युवक हनीफ मेवाती पर जबरन बंधक बनाकर दुष्कर्म करने, मतांतरित करने व वेश्यावृत्ति करवाने का आरोप लगाया है। पीड़िता के पिता जो मध्यप्रदेश में ड्राइवरी का काम करते हैं, ने बताया कि नाबालिग की मां सौतेली है। हनीफ ने उससे अवैध संबंध बना रखे हैं। 12 मार्च को उसकी नाबालिग पुत्री का उसके पास फोन आया कि पापा आप घर मत आना, मम्मी व हनीफ मेवाती आप को मारने की प्लानिंग कर रहे हैं। वह 13 मार्च को घर पहुँचा तो उसने देखा कि हनीफ मेवाती अपनी ओमनी गाड़ी में उसकी पत्नी व तीनों बच्चों को लेकर मनोहर थाना की ओर जा रहा है। उसने रोकने का प्रयास किया तो हनीफ ने बंदूक की नोक पर धमका दिया तथा मनोहरथाना थाने में उसके विरुद्ध मामला दर्ज कराकर उल्टा उसे ही बंद करवा दिया। छूटने पर जब वह घर पहुंचा तो उसे बच्चे कहीं नजर नहीं आए। तब से वह उनकी तलाश कर रहा था और लगातार पुलिस से अपने बच्चों को ढूंढ कर लाने की फरियाद भी कर रहा था।

एक दिन उसकी नाबालिग पुत्री हनीफ मेवाती के चंगुल से छूट कर घर आ गई। उसने बताया कि हनीफ ने उसे मनोहर थाना में अकलेरा रोड पर स्थित अपने बाड़े में मारुति वैन में रख रखा था। वहीं 16 मार्च को उसने पापा को मारने की धमकी देकर उसके साथ गाड़ी में दुष्कर्म किया। इसके बाद 23 मार्च को वह सभी को झालावाड़ ले गया, वहाँ स्टाम्प पेपर पर नाबालिग के तीन-चार जगह साइन करवाए। उसमें क्या लिखा था इसकी जानकारी नाबालिग को नहीं है। बड़ी मुश्किल से नाबालिग उसके चंगुल से छूट कर घर पहुंची। तब उसने बताया कि वह सभी का धर्म परिवर्तन कराने व नाबालिग से वेश्यावृत्ति करवाने की बात कह रहा था।

लगातार गुहार लगाने के बावजूद भी पुलिस प्रशासन द्वारा इस घटना पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। वहीं अभी भी उसका 4 साल का बेटा, 9 साल की बेटी व पत्नी हनीफ मेवाती के पास ही हैं। पत्नी, हनीफ मेवाती जैसा कहता है वैसा ही करती है। इसलिए वह उसकी झूठी रिपोर्ट करवाती रहती है। इस मामले में भी कामखेड़ा पुलिस से लेकर मनोहर थाना पुलिस तक उसे रिपोर्ट दर्ज करने के लिए चक्कर कटवाती रही। पुलिस अधीक्षक के पास मामले की लिखित शिकायत करने पर 2 अप्रैल को कामखेड़ा थाने में मामला दर्ज किया गया। लेकिन अभी तक उसके दो नाबालिग बच्चे जो हनीफ मेवाती के कब्जे में हैं, उसे नहीं सौंपे गए हैं, न ही नाबालिग से दुष्कर्म मामले में आरोपी पर कोई कार्रवाई की गई है। यदि पुलिस द्वारा जल्द कार्रवाई नहीं की गई तो वह दो नाबालिग बच्चों सहित उसकी पत्नी का भी धर्म परिवर्तन करवा देगा व उसकी 9 साल की बच्ची के साथ कुछ भी होने का अंदेशा है।

एक अन्य समाचार के अनुसार आमेर (जयपुर) थाना की पुलिस ने शादी का झांसा देकर युवती से बलात्कार करने के आरोपी ब्रह्मपुरी (जयपुर) निवासी मोहम्मद जावेद को गिरफ्तार किया है। वहीं नई दिल्ली के हर्ष विहार थाना क्षेत्र में एक मौलाना को किशोरी से धार्मिक स्थल में बलात्कार करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। (1जून,2021) ●

श्रद्धांजलि

वीरेन्द्र सिंह शेखावत

पूर्व सैनिक परिषद के सचिव रहे वीरेन्द्र सिंह शेखावत का स्वर्गवास 28 मई को हृदयाघात से हो गया। श्री वीरेन्द्र सिंह राजस्थान विश्वविद्यालय में लंबे समय तक परीक्षा नियंत्रक तथा अन्य महत्वपूर्ण पदों पर रहे। वे कई भाषाओं के जानकार थे। उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर पूर्व सैनिक परिषद का दायित्व निभाया। सीमाजन कल्याण समिति के दायित्व के साथ जैसलमेर को केन्द्र बनाकर सीमावर्ती जिलों में कार्य किया। वे रामजन्मभूमि आंदोलन के दौरान कारसेवा में भी शामिल हुए थे। आप मिलनसार स्वभाव के एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे।

पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

रामपाल रेनीवाल

नागौर के विभाग प्रचार प्रमुख तथा विद्या भारती विद्यालय, डेगाना के प्रधानाचार्य रामपाल जी रेनीवाल नहीं रहे। 9 जून प्रातः उन्होंने अंतिम सांस ली। आप 20 दिन से कोरोना संक्रमण के कारण अस्पताल में थे। आप रा.स्व.संघ के एक हंसमुख स्वभाव वाले ऊर्जावान कार्यकर्ता थे।

पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

कोरोना रोगियों का उपचार

गुजरात सरकार ने दी आयुर्वेद व होम्योपैथी इलाज की स्वीकृति – गंभीर रोगी भी हो रहे हैं ठीक

कोरोना रोगियों का इलाज आईएमसीआर की गाइडलाइन के अनुसार होता है। गुजरात राज्य के स्वास्थ्य सचिव जयंती रवि ने 15 मई को सहमति दी कि कोरोना पीड़ित चाहें तो आयुर्वेदिक या होम्योपैथी दवा ले सकते हैं। अब गुजरात के 8 सरकारी अस्पतालों में आयुर्वेदिक इलाज दिया जा रहा है। गुजरात आयुष विभाग की निदेशक वैद्य भावना पटेल ने बताया, कि ''हमारी योजना है कि जहां भी 100 से ज्यादा रोगी हों, वहां आयुर्वेदिक इलाज शुरू हो। अच्छी बात यह है कि मरीज भले ही सरकारी अस्पताल में भर्ती होता हो, लेकिन उसकी लिखित सहमति से आयुर्वेदिक इलाज किया जा रहा है।''

15 मई को अनुमति मिलने के बाद से हजार से ज्यादा माइल्ड लक्षणों वाले कोरोना रोगी आयुर्वेद से ठीक हो चुके हैं। कई क्रिटिकल यानि गंभीर कोरोना रोगियों का भी आयुर्वेद द्वारा सफल इलाज किया गया है। पराछा निवासी पायलबेन को गर्भाशय की टीबी थी। वह कोरोना पॉजिटिव भी हो गई। आयुर्वेद इलाज से वह कोरोना नेगेटिव हुई।

पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर जगदीश ने आयुर्वेदिक उपचार से कोरोना को हराया। वैद्य पीनल राणा ने बताया कि आयुर्वेद से कोरोना के गंभीर लक्षणों वाले मरीजों का भी 100% सफल इलाज संभव है।

ब्लैक फंगस में आयुर्वेद का चमत्कार

ब्लैक फंगस से केवल गुजरात में ही 3 जून तक 7 हजार से ज्यादा रोगी पीड़ित मिले जिनमें लगभग 200 की मौत हो चुकी है तथा 350 की आँखें निकालनी पड़ीं। इस रोग में प्रतिदिन 30 हजार रुपए के इंजेक्शन लगाने के बाद भी बीमारी से ठीक होने की दर 100 में से मात्र 4 आ रही है। ऐसे में आयुर्वेद उम्मीद की किरण बनकर आया है। सूरत के एक आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. रजनीकांत पटेल ने ब्लैक फंगस के 70 रोगियों का उपचार किया। इनमें से न तो किसी की मौत हुई और न ही किसी की आँख निकालनी पड़ी। यहां तक कि खराब हुई आंखें और जबड़े तक ठीक हो गए। इन रोगियों का मेडिकल एविडेंस के साथ इलाज किया जा रहा है।

दिसम्बर तक पूरा टीकाकरण

भारतीय आयुवर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएमआर) के प्रमुख बलराम भार्गव ने बताया कि जुलाई के अंत या अगस्त के आरंभ में हमारे पास इतने टीके उपलब्ध हो जाएंगे कि प्रतिदिन एक करोड़ लोगों का टीकाकरण कर सकें तथा दिसम्बर तक पूरे देश का टीकाकरण होने का विश्वास है।

कोरोना से जंग में समाज ने किया सहयोग

कोरोना महामारी के विरुद्ध लड़ाई में केन्द्र व राज्य सरकारों के साथ ही समाज के अनेक संगठन व व्यक्तियों ने भी आगे आकर सेवा व सहयोग किया है। ऐसे कुछ अनुकरणीय प्रयास–

ऑक्सीजन

- ऑक्सीजन प्लांट लगवाया– 30 एनएम क्यूब प्रतिघंटे जयपुर के दुर्लभजी अस्पताल में– अमेरिका से सुनील अग्रवाल ने
- दुबई से 510 कॉन्संट्रेटर भेजे मूलतः जयपुर के ही आर. सी.गुप्ता ने
- 350 कॉन्संट्रेटर (मूल्य 4.50 करोड़ रुपये) दिए– शिव योग फाउन्डेशन ने

कोरोना से मृत माता–पिता की संतानों की देखभाल

- ऐसे 40 बच्चों का पालन–पोषण तथा उच्च शिक्षा का जिम्मा लिया– संजीव प्रकाशन के प्रदीप मित्तल एवं कैलेंडर हाउस के राकेश गुप्ता ने
- ऐसे सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा– खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के अंतर्गत सभी शिक्षण संस्थाओं द्वारा
- ऐसी बेटियों के विवाह की जिम्मेदारी ली– विप्र महासभा, जयपुर की कोर कमेटी ने 'साथी हाथ बढ़ाना' योजनान्तर्गत

सस्ती MRI

- **निजी लैब में 28 हजार रुपयों में होने वाली कॉन्ट्रास्ट एमआरआई जांच मात्र 4,500 रुपयों में** करने की घोषणा– आईबीएस हॉस्पीटल के डॉ.कमल गोयल द्वारा
- **निःशुल्क कोचिंग– एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट द्वारा**। कोटा में रहने व खाने की भी व्यवस्था
- **70 से अधिक कोरोना मृतकों का अंतिम संस्कार–** उदयपुर के किशन सोनी द्वारा (हिन्दू जागरण मंच के सहयोग से)
- **मृतकों की अस्थियों को हरिद्वार में प्रवाहित किया गया** – जयपुर सिख समाज द्वारा
- **मृतकों का तर्पण व पिण्डदान (ऑनलाइन)**– गायत्री परिवार, जयपुर द्वारा

– भोजन या राशन वितरण, रक्तदान शिविर, मास्क व दवा वितरण, काढ़ा वितरण आदि कार्यों में भी बड़ी संख्या में अनेक संगठन व व्यक्ति सक्रिय हैं।

सेवा ही संगठन और युवा मोर्चा– एक रिपोर्ट

कोरोना महामारी से उत्पन्न कठिन परिस्थितियों में युवाओं ने समाज को सेवा के माध्यम से सम्बल देने का कार्य किया है। भारतीय जनता युवा मोर्चा, राजस्थान एक उदाहरण बना कि किस प्रकार एक राजनैतिक दल का युवा वर्ग अपने संगठन सामर्थ्य का उपयोग विकट परिस्थितियों में समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कर सकता है।

देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने ना केवल भोजन पैकट्स, राशन सामग्री, मास्क व सैनेटाइजर का वितरण किया, वरन् जैसे ही समाज की आवश्यकतायें बदली, युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने सेवा का प्रतिरूप बदल, चिकित्सकीय सुविधायें समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास किया। राष्ट्रीय स्तर पर युवा मोर्चा के द्वारा एक डाक्टर्स हेल्पलाइन जारी कर दूरभाष के माध्यम से भी चिकित्सकीय परामर्श आमजन तक पहुँचाने का कार्य किया गया। राजस्थान प्रदेश के भी लगभग 75 चिकित्सकों ने उक्त डाक्टर्स हेल्पलाइन के माध्यम से निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श देने का काम किया।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार के कुल 7 वर्ष पूर्ण होने पर राजस्थान में युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदेशव्यापी रक्तदान कार्यक्रम चलाकर लगभग 10 हजार यूनिट रक्त समाज के चरणों में अर्पित किया। अपने दल की सरकार की वर्षगांठ को युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने सेवा का माध्यम बनाया। युवाओं में संस्कारों के माध्यम से न केवल कोरोना हारेगा वरन समाज के निर्माण में युवा अपनी भूमिका भी तय करेगा।

गैर मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता देने की कार्रवाई आरम्भ– मुस्लिम लीग ने किया विरोध

पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं अफगानिस्तान से भारत में आए गैर मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता देने हेतु केन्द्र सरकार ने कार्रवाई शुरु कर दी है। गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, हरियाणा व पंजाब के 13 जिलों में रह रहे ऐसे लोगों से आवेदन मांगे गए हैं।

बता दें कि गैर मुस्लिम शरणार्थियों को भारत की नागरिकता देने संबंधी कानून–2019 में बनाया गया था, परन्तु यह अधिसूचना इससे पहले के कानून (नागरिकता अधिनियम 1955) की धारा 16 द्वारा केन्द्र सरकार को प्राप्त शक्तियों का उपयोग करते हुए धारा 5 के अंतर्गत जारी की गई है। इस अधिसूचना के द्वारा जिला कलेक्टर को ऐसे शरणार्थियों को नागरिकता देने का अधिकार दिया गया है अर्थात् पुराने कानून में भी सरकार को पर्याप्त शक्तियां थीं, जिनका उपयोग अब किया जा रहा है। केन्द्र सरकार का यह कदम स्वागत योग्य है। परन्तु, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग ने केन्द्र सरकार की इस अधिसूचना को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी है तथा इस पर रोक लगाने की मांग की गई है।

जॉनसन एंड जॉनसन बेबी व टैल्कम पाउडर से महिलाओं को कैंसर

कंपनी को देना ही होगा 14,500 करोड़ रुपयों का मुआवजा

जॉनसन बेबी पाउडर एवं टैल्कम पाउडर से महिलाओं को कैंसर होने का समाचार पुराना है। नई बात यह है कि अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट में फिर से सुनवाई करने के लिए कंपनी की ओर से लगाई गई याचिका खारिज कर दी गई है। महिलाओं को हुए कैंसर के लिए कंपनी को 14,500 करोड़ रुपयों का मुआवजा देना ही होगा। यह मुकदमा 22 महिलाओं ने किया था। गौरतलब है कि जॉनसन एंड जॉनसन कंपनी के उत्पादों से कैंसर होने के संबंध में 9 हजार से ज्यादा ऐसे ही मुकदमे दर्ज कराए गए हैं। इससे पहले भी कंपनी 2016 में इसी तरह के मुकदमे में 375 करोड़ तथा 2020 में लगभग 73 करोड़ रुपयों का मुआवजा दे चुकी है।

रिपोर्ट में हुआ खुलासा– मैगी नूडल्स सहित नेस्ले के प्रोडक्ट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

दुनिया की सबसे बड़ी डिब्बा बंद खाद्य एवं पेय बनाने वाली कंपनी नेस्ले की स्वयं की एक आंतरिक रिपोर्ट में कहा गया है कि मैगी सहित कम्पनी के आधे से ज्यादा खाद्य पदार्थ एवं पेय स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। फाइनेंशियल टाइम्स अखबार द्वारा प्राप्त कर लिए गए उक्त दस्तावेज (रिपोर्ट) से यह खुलासा हुआ है। उक्त रिपोर्ट में सनसनीखेज बात यह है कि कंपनी के कुछ खाद्य पदार्थ व पेय में कितना भी सुधार किया जाए, वे कभी भी 'स्वस्थ' नहीं होंगे।

उक्त विश्लेषण में अभी नेस्ले कंपनी के सभी उत्पाद शामिल नहीं किए गए हैं। चिकित्सा पोषण, पालतू पशु भोजन, कॉफी व शिशु खाद्य के बारे में अभी जाँच नहीं की गई है। नेस्ले के कई खाद्य व पेय पदार्थ हैं जिनमें चीनी या सोडियम का उच्च स्तर होता है। आंतरिक दस्तावेज के अनुसार नेस्ले के लगभग 70 प्रतिशत खाद्य उत्पाद, 96 प्रतिशत पेय (शुद्ध कॉफी को छोड़कर) तथा 99 प्रतिशत आइसक्रीम व कन्फेक्शनरी 'स्वास्थ्य की थ्रेशोल्ड' रेटिंग को पूरा करने में विफल है।

सबसे बड़ा मूर्ख

एक कंजूस व्यापारी था। उसका नौकर शम्भु बड़ी उदार प्रवृत्ति का था। शम्भु अपने वेतन का काफी हिस्सा गरीबों और जरूरतमन्दों में बाँट देता था। कंजूस व्यापारी उससे हमेशा कहता– 'अरे मूर्ख! कुछ जोड़कर भी रख।' लेकिन शम्भु टाल जाता।

एक बार खीझकर व्यापारी ने एक डण्डा शम्भु को दिया और कहा–' जब कोई तुझे अपने से भी बड़ा मूर्ख मिले, तो ये डण्डा उसे दे देना।' उसके बाद वह व्यापारी अक्सर शम्भु से पूछता– ' क्या कोई अपने से बड़ा मूर्ख तुझे मिला?' शम्भु विनम्रता से इनकार कर देता।

कुछ समय बाद व्यापारी सख्त बीमार पड़ा और उसका अन्तिम समय निकट आ गया। वह शम्भु से बोला– 'अब मैं बचूँगा नहीं। कुछ ही दिनों में महायात्रा पर चल पड़ूंगा।' भोला शम्भु बोला– ' मालिक! मुझे साथ ले चलिये।' मालिक ने प्यार से झिड़का– 'अरे मूर्ख! वहाँ कोई साथ नहीं जाता।'

इस पर शम्भु ने कहा– 'अच्छा, किसी को मत ले जाइये, लेकिन अपनी सुख–सुविधा के लिये रुपये–पैसे, घोड़ा–गाड़ी आदि तो लेते जाइये।' इस पर व्यापारी खीझकर बोला– 'अरे महामूर्ख! वहाँ तो एक सुई भी नहीं ले जा सकते, एकदम खाली हाथ जाना पड़ता है।'

अब शम्भु बोला–'मालिक! तब तो यह डण्डा आप ही रखिये। भला, आपसे बड़ा मूर्ख कौन होगा, जिसने सारी जिन्दगी कमाने में ही लगा दी! न दान किया न पुण्य। जब कुछ साथ जायेगा ही नहीं, तो जोड़–तोड़कर रखने से क्या फायदा?' ●

बाल प्रश्नोत्तरी

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! पाथेय कण 1 मई, 2021 का संयुक्तांक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर सीट' में भरकर 79765 82011 व्हाट्सअप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जायेंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

1. मुम्बई में निधि समर्पण अभियान का आरम्भ साध्वी ऋतम्भरा ने किस मंदिर से किया?
(क) मुम्बा देवी मंदिर (ख) आंबे माता मंदिर (ग) महालक्ष्मी मंदिर (घ) अंजना मंदिर

2. श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की योजनानुसार निधि संग्रह का कार्य किसके नेतृत्व में पूर्ण हुआ?
(क) भारतीय किसान संघ (ख) विश्व हिन्दू परिषद (ग) सेवा भारती (घ) भारत विकास परिषद्

3. समर्पण निधि संग्रह के लिए कितने चरण तय किये गये थे?
(क) तीन (ख) पाँच (ग) दो (घ) चार

4. धन संग्रह का द्वितीय चरण कब से कब तक का था?
(क) 15 से 30 जनवरी (ख) 1 से 15 फरवरी (ग) 31 जन. से 27 फर. (घ) 15 से 29 फर.

5. निधि संग्रह में आम जन की अधिक से अधिक सहभागिता हो, इसके लिए सबसे कम का कूपन कितने रुपये का था?
(क) 20 रुपये (ख) 10 रुपये (ग) 50 रुपये (घ) 5 रुपये

6. राजस्थान क्षेत्र से राम मंदिर के लिए कितने करोड़ रुपये का समर्पण हुआ?
(क) 300 करोड़ (ख) 150 करोड़ (ग) 521 करोड़ (घ) 250 करोड़

7. श्री चंचल प्राग मठ राजस्थान के किस क्षेत्र में स्थित है?
(क) बीकानेर (ख) बाड़मेर (ग) जोधपुर (घ) श्री गंगानगर

8. राम मंदिर का ऐतिहासिक निर्णय सुनाने वाले सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश कौन थे?
(क) अशोक भूषण (ख) रंजन गोगोई (ग) एस अब्दुल नजीर (घ) डीवाई चन्द्रचूड़

9. श्री लालकृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या तक रामरथ यात्रा कब निकाली थी?
(क) सितम्बर 1990 (ख) सितम्बर 1991 (ग) सितम्बर 1994 (घ) सितम्बर 1996

10. विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा अप्रैल 1984 में पहली धर्म संसद कहाँ आयोजित की गई थी?
(क) भोपाल (ख) हरिद्वार (ग) नागपुर (घ) दिल्ली

उत्तर सीट – 1( ) 2( ) 3( ) 4( ) 5( ) 6( ) 7( ) 8( ) 9( ) 10( )

पहचानो तो यह महान नारी कौन है?

बाल मित्रों! यहाँ एक महान नारी का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

1. इन्हें स्वराज्य जननी भी कहा जाता है ?
2. आप शिवाजी महाराज की मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत रहीं।
3. आपका विवाह शाहजी भोंसले के साथ हुआ।

(उत्तर- माता जीजाबाई)

तथ्यों को झुठलाता - मोदी विरोध

पिछले कुछ दिनों से मोदी विरोधी लॉबी के लेखक–पत्रकार एक विमर्श (Narrative) स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पतन की शुरूआत हो गई है। मोदी न केवल कोरोना महामारी का मुकाबला करने में असफल हो गए हैं, बल्कि गत दिनों पाँच विधानसभाओं के चुनावों में भी उनकी पराजय हो गई है।

चूंकि कोरोना की दूसरी लहर भारत में अचानक आ गई थी, लोग बड़ी संख्या में संक्रमित होने लगे तथा कई स्थानों पर ऑक्सीजन व रेमडेसिविर की कमी भी हो गई। यह लहर ज्यादा मारक थी। ऐसे में मोदी विरोधी विमर्श (Narrative) स्थापित करने वाली लॉबी के साथ शेष मीडिया भी बह गया– ऐसा लगता है।

जहां तक कोरोना से संक्रमित होने व कालकलवित होने की बात है, यह सबके लिए चिंता एवं दुःख का विषय था और है। परन्तु जिस तरह इसे मीडिया ने उछाला– वह दुखद था। समाज के सम्पन्न तबके के लोग जिन्हें ऑक्सीजन, रेमडेसिविर वगैरह सहित सर्वश्रेष्ठ इलाज उपलब्ध था, ऐसे लोग भी हमसे बिछुड़ रहे थे। मृत्यु–दर कम हो या ज्यादा, वह दुखदायी है परन्तु आज भी दुनिया के विकसित देशों से, जहां सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होने का दावा किया जाता है, भारत की तुलना करके देख लीजिए। आबादी को ध्यान में रखिएगा। एक समाचार पत्र ने अमेरिका के राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति की खिलखिलाते हुए की तस्वीर छाप कर शीर्षक दिया– 'शाबाश अमेरिका'। शाबाशी इस बात की दी जा रही थी कि उसने अपनी आबादी के 46 प्रतिशत को वैक्सीन लगा दी है। समाचार के अंत में भारत का भी उल्लेख था कि मात्र 10% को वैक्सीन लगी है। परन्तु अमेरिका की 33 करोड़ आबादी का 46% होता है 15 करोड़ और भारत की 140 करोड़ आबादी का 10% होता है 14 करोड़, अर्थात् अमेरिका में 15 करोड़ वैक्सीन लगाई गई और भारत में 14 करोड़ परन्तु अमेरिका को शाबाशी और भारत के प्रति हेय दृष्टि! अमेरिका में 700 शव दफनाने के इंतजार में ट्रकों में कई दिनों से भरे होने का समाचार कुछ दिन पहले का ही है। ब्रिटेन में फिर कोरोना फैलने के कारण कई देशों ने वहां से आने वाले विमानों पर रोक लगा दी है। तो यह महामारी है, कब, कहाँ, क्या रूप ले– क्या पता, कृपया भारत को बदनाम करना बंद करें।

और फिर कोरोना महामारी के दौरान व्यवस्था में जो भी कमी थी, उसके जिम्मेदार क्या केवल केन्द्र सरकार ही है? प्रत्येक राज्य में राज्य–सरकारें हैं। क्या उनकी कोई जिम्मेदारी व भूमिका नहीं थी? मजेदार बात तो यह है कि **'लोक स्वास्थ्य और स्वच्छता, अस्पताल और औषधालय'** – यह विषय संविधान में 'राज्य सूची के क्रमांक 6 पर दिया हुआ है, अर्थात् इस विषय के संबंध में व्यवस्था करने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की होगी। परन्तु मीडिया सारा दोष देश के प्रधानमंत्री पर ही डाल रहा है। यह विषय केन्द्र सूची में तो दूर–दूर तक भी नहीं है। इतना ही नहीं, निम्नांकित विषय भी राज्यसूची में ही हैं जिनकी कोरोना को फैलाने में बड़ी भूमिका रही है–

प्रविष्टि–1. लोक व्यवस्था, यानि किसी भी प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक समारोह, सभा आदि पर रोक लगाने या उसे नियंत्रित करने का कार्य राज्य सरकार का है। लोग भीड़ न करें इसकी व्यवस्था राज्य सरकार को ही करनी है।

प्रविष्टि– 7. तीर्थ यात्राएं

प्रविष्टि–26. उद्योग

प्रविष्टि–28. बाजार और मेले

कोरोना की पहली लहर के उतार पर होने के समय बाजारों में व साप्ताहिक हटवाड़ों में लोग बिना मास्क भीड़ लगा रहे थे। विवाह समारोह में 100 व्यक्तियों तक रहने के आदेश निकाले गए, परन्तु कितने अधिकारी या जनप्रतिनिधि निरीक्षण करने पहुँचे? 500 से 1000 व्यक्तियों तक ने विवाह समारोह में भाग लिया। यह सब देखने

कोरोना गाइडलाइन की अवहेलना करती भीड़

का काम क्या राज्य सरकारों का नहीं था?

परन्तु नहीं जी, मीडिया के अनुसार राज्य सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिम्मेदारी सारी मोदी की ही है। स्थिति कुछ दिन नियंत्रण के बाहर रही तो मोदी फेल हो गया।

कितने देशों में वैक्सीन का उत्पादन हो रहा है? बताइए जरा गिन कर। यह मोदी ही थे जो वैक्सीन उत्पादन के लिए कब से प्रयासरत थे। भारत में वैक्सीन का निर्माण होने के कारण ही समय पर उपलब्ध हो सकी तथा उसकी कीमत भी कम है। बाहर से आने वाली वैक्सीन एक हजार से ज्यादा कीमत की ही है। अब फिर कोरोना नियंत्रण में आ रहा है, तो इसका श्रेय किसको देंगे? वैक्सीन को पेटेंट-फ्री करने की पहल भी मोदी सरकार ने WTO में दिसम्बर 2020 में कर दी थी।

यदि हाल ही में सम्पन्न 5 राज्यों की विधानसभा के नतीजों की बात करें तो जहां प.बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने वापसी की वहीं असम में भाजपा ने वापसी की। यदि पिछली विधानसभा के नतीजों से तुलना करें तो जहां कांग्रेस व वाम दल नुकसान में रहे वहीं भाजपा आगे बढ़ी है। देखें आंकड़े-

राज्य	भाजपा ने 2016 में जीती सीटें	भाजपा ने 2021में जीती सीटें	परिणाम
असम	60	60	सत्ता में वापसी (मत प्रतिशत भी बढ़ा)
पुडुचेरी	0	6	पहली बार बीजेपी गठबंधन सत्ता में आया
तमिलनाडु	0	4	20 वर्ष तक एक भी सीट नहीं थी
पश्चिम बंगाल	3	77	वोट प्रतिशत 10.16 से बढ़कर 38.13 हुआ
केरल	1	0	राज्य में कभी प्रभावी नहीं थी, परन्तु मत प्रतिशत इस बार बढ़ा है

परन्तु कैसे-कैसे लेख छापे जा रहे हैं? **'फीका पड़ा कमल'**, **'चूकता ब्रह्मास्त्र'** और कैसी कैसी टिप्पणी? देखिए एक बानगी-**''विधानसभा चुनावों में निराशाजनक नतीजों ने ब्रांड मोदी पर भाजपा की निर्भरता को लेकर सवाल खड़े किए।''** असम में भाजपा पुनः सत्तारूढ़ हो गई है- यह कुछ नहीं, इसके लिए भी भाजपा को श्रेय नहीं। इसकी भी चर्चा कैसे की जा रही है-''भाजपा गठबंधन ने असम में दूसरा कार्यकाल हासिल कर लिया है पर पड़ोस के घटना क्रम ने इस जीत को फीका कर दिया।'' यानि आपकी सोच पश्चिम बंगाल तक सीमित कर दी। ये संदर्भ हिन्दी पत्रिका 'इंडिया टूडे' से लिए गए हैं। एक अंग्रेजी पत्रिका 'The Week' के शीर्षक या टिप्पणियाँ देखिए-

BJP's dismal show in assembly election
(विधान सभा चुनावों में भाजपा का निराशाजनक प्रदर्शन)
Fading Saffron (फीका पड़ता भगवा)
Dented image of the PM
(प्रधानमंत्री की धूमिल होती छवि)

उपरोक्त उदाहरण मात्र दो पत्रिकाओं के हैं।

परिणामों से स्पष्ट है कि कहीं से भी भाजपा इन विधानसभा चुनावों में पीछे नहीं गई, वरन् गत चुनावों की तुलना में आगे बढ़ी है। पहले एक राज्य में सत्तारूढ़ थी, अब दो राज्यों में है। पहले दक्षिण के राज्य तमिलनाडु व पुडुचेरी में एक भी सीट नहीं थी, अब एक राज्य में 4 तो दूसरे में सत्तारूढ़ हो रही है। जहां तक केरल का प्रश्न है, वहां यथा स्थिति वाला मामला है। फिर भी लिखा जा रहा है-'' विधान सभा चुनावों में भाजपा का निराशाजनक प्रदर्शन!''

मोदी विरोधी लॉबी का कहना है कि भाजपा पश्चिम बंगाल में हार गई। कहते थे 200 से ज्यादा सीटों पर जीतेंगे। बड़ी विचित्र बात है। क्या कहा था पर जोर है, क्या प्राप्त किया इस पर नहीं। 3 से 77 पर पहुँचना क्या कम उपलब्धि है? प.बंगाल में 13 सीटें ऐसी थी जिन पर हार का अंतर नोटा के वोट से कम रहा। 70 सीटें ऐसी हैं जहां हार का अंतर 300 से 5000 तक रहा। सीएम ममता बनर्जी स्वयं नंदीग्राम से चुनाव हार गईं।

परन्तु नहीं साहब, आखिर विमर्श (Narrative) तो 'मोदी के पतन' का बनाना है ना? इसलिए बंगाल के विधान सभा चुनाव की तुलना 2019 में वहां हुए लोकसभा चुनाव से करने लगे। मतदाता अनेक राज्यों में लोकसभा और विधान सभा चुनावों में भिन्न पार्टियों को जिताता आया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है दिल्ली का -

2014 के लोकसभा चुनाव में सभी सात सीटों पर बीजेपी जीती, आप पार्टी- शून्य

2015 के विधान सभा चुनावों में आप पार्टी को 70 में से 67, भाजपा मात्र 3

2019 में लोकसभा की सभी सातों सीटें भाजपा को, आप पार्टी- शून्य

2020 के विधान सभा चुनाव में फिर आप पार्टी जीती, 70 में से 62, भाजपा मात्र 8

कौन लोग हैं ये जो जनता को भ्रमित कर रहे हैं? जनता को इनकी पहचान करना आवश्यक है। क्या ये लोग अपने 'पत्रकारिता धर्म' का निर्वाह कर रहे हैं? जनता को अपने विवेक के आधार पर निर्णय लेना होगा। ये लोग राष्ट्रीय पुनर्जागरण के भी विरोधी है। इनका एक मात्र लक्ष्य है- भारत के सनातन विचार, भारत की संस्कृति तथा दर्शन-चिंतन को प्रभावी न होने देना। राष्ट्रवादी शक्तियों की बढ़त इन्हें अच्छी नहीं लगती है। परन्तु अब लोग जागरूक हैं और इनके विमर्श (Narrative) को स्वीकार करने के मूड में नहीं हैं। ●

- रामस्वरूप अग्रवाल

स्वतंत्र और अखण्ड भारत के आराधक - वीर सावरकर

छगन लाल बोहरा

28 मई, उस महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर का जन्मदिन है जिसने अपने भाइयों सहित अपना तन, मन, धन, जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता के यज्ञ में स्वाहा कर दिया।

अध्ययन के साथ-साथ देश की स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी गतिविधियाँ, लेखन, जन-जागरण और युवकों को संगठित करने का उनका कार्य सतत चलता रहा। उनकी उत्कट देशभक्ति और बौद्धिक क्षमता ने लोकमान्य तिलक को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति से विनायक को लन्दन भेजने की व्यवस्था की।

बचपन से मातृभूमि भारत और उसकी स्वतंत्रता विनायक सावरकर के रोम-रोम और श्वास-श्वास में बसी हुई थी। छात्रवृत्ति के आवेदन में वे लिखते हैं ''स्वाधीनता और स्वराज्य को मैं राष्ट्र की श्वास और धड़कन की तरह आवश्यक मानता हूँ। बाल्यकाल से युवावस्था तक अपने देश की परतंत्रता की बेड़ियाँ तोड़ कर स्वतंत्रता प्राप्ति का एकमात्र स्वप्न मैं दिन-रात देखता आ रहा हूँ।''

तरुण अवस्था में ही अपने पैतृक गांव भगूर में कुल देवी की प्रतिमा के सामने विनायक ने भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु अपना जीवन अर्पण करने की प्रतिज्ञा की। चाफेकर बन्धुओं की फांसी ने सावरकर को बहुत उद्वेलित किया।

नासिक और पूना में पढ़ाई के दौरान उन्होंने देशभक्त विद्यार्थियों का एक संगठन ''मित्रमेला'' के नाम से गठित किया, जिसके सदस्य भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज सत्ता को उखाड़ फेंकने हेतु

'द वीक' पत्रिका ने सावरकर के बारे में अपमानजनक लेख के लिए माफी मांगी

'द वीक' पत्रिका का माफीनामा

(अंक - 23 मई,2021)

'' विनायक दामोदर सावरकर से संबंधित एक लेख 'द वीक' में 24 जनवरी, 2016 को Lamb Lionised (मेमना शेर की तरह महामंडित) शीर्षक से प्रकाशित हुआ था जिसमें उनके लिए Hero to Zero (नायक से शून्य) उल्लेख किया गया, इसे गलत समझा गया और इसके कारण वीर सावरकर जैसे उच्च सम्मानित के प्रति गलत धारणा बनी। हम वीर सावरकर का अत्यधिक सम्मान करते हैं। इस लेख ने यदि किसी व्यक्ति को पीड़ा पहुँचाई है तो हमें (प्रबंधन को) इसके लिए पछतावा है और उक्त प्रकाशन के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।''

अंग्रेजी की साप्ताहिक पत्रिका 'द वीक' ने आज से 5 वर्ष पूर्व वीर सावरकर के बारे में पत्रिका में प्रकाशित अपमानजनक लेख के लिए अब माफी मांग ली है।

24 जनवरी,2016 को 'द वीक' में एक लेख Lamb Lionised (मेमना शेर की तरह महामंडित) शीर्षक से प्रकाशित हुआ था, जिसे एक पत्रकार निरंजन टकले ने लिखा था। लेखक ने एक इतिहासकार शम्सुल इस्लाम को उद्घृत करते हुए सावरकर के बारे में अभद्र टिप्पणी की थी।

सावरकर के पौत्र तथा 'स्वातंत्र्यवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक' के कार्याध्यक्ष रणजीत सावरकर ने उक्त पत्रिका के प्रबन्ध संपादक, संपादक, मुद्रक व प्रकाशन के विरुद्ध मानहानि का आपराधिक मुकदमा न्यायालय में दर्ज कराया और कहा कि सावरकर को बदनाम करने के लिए जानबूझ कर तथ्यों की अनदेखी की गई। भारतीय दण्ड संहिता (आईपीसी) की धारा 34, 500, 501 तथा 502 के अंतर्गत आपराधिक मामला दर्ज किया गया। रणजीत सावरकर ने कहा, ''मैं उन्हें कानून के अनुसार दण्डित कराना चाहता हूँ, ताकि सावरकर के बारे में कोई भी व्यक्ति झूठे तथ्य लिखने की हिम्मत न करे।''

मुकदमा 5 साल से चल रहा है। अब तक 21 सुनवाइयां हुई हैं। दिसम्बर, 2019 में आरोपियों को निजी मुचलके पर जमानत मिली। आरोपियों ने शायद मुकदमे के परिणाम को भांप लिया है, इसलिए मुकदमे में निर्णय से पूर्व ही प्रबंधन ने माफी मांग ली है।

जो लोग एक समुदाय विशेष का तुष्टीकरण करने के लिए विनायक सावरकर जैसे देशभक्त के लिए आज भी अभद्र भाषा बोलते हैं, क्या वे इस प्रकरण से कुछ सबक लेंगे?

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

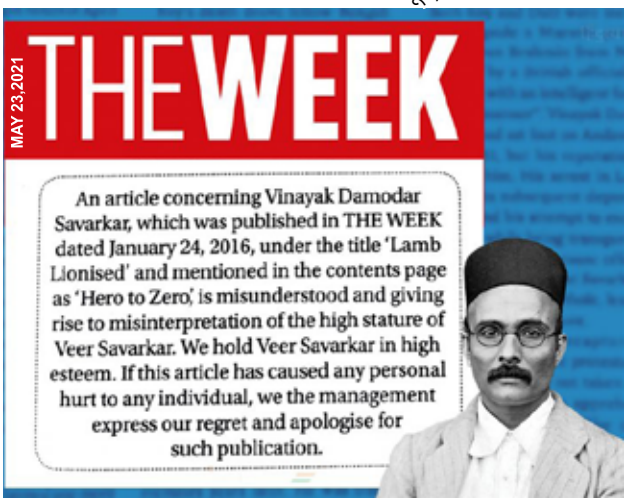

सशस्त्र संघर्ष करने और देश के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर करने की शपथ लेते थे। देशभक्ति से ओतप्रोत भाषण, गीत, कविताएँ, महान क्रांतिकारियों के जीवन प्रसंगों का वाचन, गणेश उत्सव, शिवाजी जन्मोत्सव आदि के माध्यम से ''मित्रमेला'' के सदस्यों में क्रांति की भावना और समझ बढ़ाने के प्रयास किये जाते थे।

यही 'मित्रमेला' आगे चलकर 1904 में ''अभिनव भारत'' के नाम से भारत के प्रमुख क्रांतिकारी संगठन के रूप में विकसित हुआ जिसने स्वतंत्रता संग्राम को अनेक प्रसिद्ध क्रांतिकारी, उत्कट देशभक्त, नेता और लेखक दिये। सावरकर ने अंग्रेजों के भारत पर अवैध व अन्याय पूर्ण शासन

इटली के क्रांतिकारी मेजिनी की जीवनी और '1857 का स्वातंत्र्य समर' उन्होंने मराठी में लिखी। फिर उनके अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी और अन्य भाषाओं में छपे, जिन्होंने देशभक्ति का तूफान खड़ा किया। अंग्रेज सरकार ने छपने से पहले ही प्रतिबंध लगा दिया, परन्तु गुप्त रूप से पुस्तकें छपीं और हजारों प्रतियाँ वितरित हुईं।

के खिलाफ भारतीयों के वैधानिक व तर्कपूर्ण संघर्ष को विश्व के सामने एक नये रूप में प्रस्तुत किया। 1906 से 1910 तक अंग्रेजों की राजधानी लन्दन में रह कर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष छेड़ा वह अद्वितीय है।

सावरकर अत्यंत मेधावी व गहन अध्ययनशील युवक थे। भारत के ही नहीं, विश्व के इतिहास और विश्व भर में चल रही क्रांतिकारी गतिविधियों की उन्हें विशद् जानकारी थी। अनेक देशों के प्रमुख क्रांतिकारियों ने उन्हें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग किया। कई गुप्त संगठन उन्हें अपना आदर्श मानते थे। भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, मैडम भीकाजी कामा, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, मदनलाल धींगड़ा, चम्पक रमण पिल्लई जैसे प्रसिद्ध देशभक्त उनके सहयोगी थे।

क्रांतिकारी मदनलाल धींगड़ा ने भारतीयों पर अत्याचार करने वाले कर्जन वायली को सजा देने के लिए भरी सभा में गोली से उड़ा दिया था। कोर्ट में बयान देते हुए उसने सिंह की तरह गरजते हुए कहा ''यह अंग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता का युद्ध है। यह तब तक जारी रहेगा जब तक अंग्रेज भारत छोड़ कर चले नहीं जाते। भारतमाता की जय बोलते हुए वह वीर फांसी पर चढ़ गया।

गुलाम मानसिकता वाले खुशामदी भारतीयों ने आगा खाँ की अध्यक्षता में मदनलाल धींगड़ा की भर्त्सना का एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया और कहा कि ''यह सभा सर्वसम्मत्ति से धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को गोली मारने के कृत्य की निन्दा करती है।'' तभी सभा में बैठे युवक विनायक दामोदर सावरकर का धीर, गंभीर और रोष भरा स्वर गूंजा, ''नहीं, सर्वसम्मत्ति से नहीं।'' मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ। मदनलाल धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को भारतीयों पर किये गये अत्याचारों के लिए दी गई सजा का समर्थन और उसके इस वीरता पूर्ण कृत्य के लिए अभिनन्दन करता हूँ।'' सारी सभा अवाक् रह गई युवक सावरकर की इस सिंह गर्जना की धमक न केवल इंग्लैण्ड बल्कि सारे विश्व में सुनायी पड़ी। वे क्रांतिकारियों के आदर्श नायक बन गये।

1906 में लन्दन पहुंचने के थोड़े ही समय में सावरकर ने अपने स्वभाव के अनुसार वहां भी देशभक्त विद्यार्थियों का संगठन Free India Society नाम से गठित कर लिया। प्रति सप्ताह इसकी मीटिंग में भारत की स्वतंत्रता के लिए युवकों को मानसिक रूप तैयार करने हेतु देशभक्ति पूर्ण भाषण होते थे। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह जैसे महापुरुषों की जयन्तियाँ, दशहरा आदि अवसरों पर युवकों में देशभक्ति और भारत की स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा दी जाती थी। हथियार चलाना, बम बनाना आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। विश्व में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलनों और उसके नायकों के विषय में जानकारी दी जाती। रूस, फ्रांस, इटली, आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों और विशेष रूप से 1857

उस महान देशभक्त क्रांतिकारी के अतुलनीय संघर्ष और बलिदान गाथा को हाशिए पर ढकेलने और भारतीय जनमानस से मिटाने के प्रयास करने वाले तथाकथित राजनेताओं और इतिहासकारों को सावरकर की वीरता पर प्रश्न खड़ा करने से पहले अंग्रेज सरकार द्वारा उन पर लगाये गये अभियोगों को अवश्य जान लेना चाहिये कि वे अंग्रेजों के लिए कितना बड़ा खतरा थे।

के स्वातंत्र्य समर और उसके नायकों के वीरतापूर्ण कार्यों के विषय में सावरकर के भाषण होते थे।

इटली के क्रांतिकारी मेजिनी की जीवनी और ''1857 का स्वातंत्र्य समर'' उन्होंने मराठी में लिखी। फिर उनके अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भाषाओं में छपे, जिन्होंने देशभक्ति का तूफान खड़ा किया। अंग्रेज सरकार ने छपने से पहले ही प्रतिबंध लगा दिया, परन्तु गुप्त रूप से पुस्तकें छपीं और हजारों प्रतियाँ वितरित हुईं।

10 मई, 1907 के दिन 1857 की क्रांति की स्वर्ण जयंती लन्दन में बड़े समारोह पूर्वक आयोजित कर सावरकर ने सरकार द्वारा इसे गदर के रूप में प्रचारित करने के षड्यंत्र का पर्दाफाश किया तथा सिद्ध किया कि यह ''स्वराज्य'' की प्राप्ति और ''स्वधर्म'' की स्थापना के लिए भारत की जनता द्वारा लड़ा गया स्वतंत्रता संग्राम था।

10 मार्च, 1910 को लन्दन में सावरकर की गिरफ्तारी, आयरिश क्रांतिकारियों द्वारा पुलिस दल पर हमला कर उन्हें छुड़ाने के प्रयास, भारत लाये जाते वक्त मार्सेल्स (फ्रांस) के तट पर जहाज से कूद कर बचने की विश्व प्रसिद्ध घटना, मुंबई लाकर मुकदमे का नाटक, दो आजन्म काला पानी की सजा और 2 जुलाई, 1921 तक अण्डमान के रौरव नरक में अंग्रेजों द्वारा दी गई अमानवीय यातनाएँ रोंगटे खड़े कर देने वाली विश्व प्रसिद्ध क्रांति गाथा है जो देश के बच्चे-बच्चे के लिए पठनीय और अनुकरणीय है।

उस महान देशभक्त क्रांतिकारी के अतुलनीय संघर्ष और बलिदान गाथा को हाशिए पर ढकेलने और भारतीय जनमानस से मिटाने के प्रयास करने वाले तथाकथित राजनेताओं और इतिहासकारों को सावरकर की वीरता पर प्रश्न खड़ा करने से पहले अंग्रेज सरकार द्वारा उन पर लगाये गये अभियोगों को अवश्य जान लेना चाहिये कि वे अंग्रेजों के लिए कितना बड़ा खतरा थे-

1. ब्रिटिश सम्राट को प्रभुसत्ता से वंचित करने का प्रयास।
2. भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध षड्यंत्र।
3. अवैध अस्त्र-शस्त्रों का संग्रह और वितरण।
4. कर्जन वायली व जैक्शन की हत्या की प्रेरणा देना।
5. लन्दन में अस्त्र-शस्त्र इकट्ठा करना व भारत भेजना।
6. 1906 तक भारत में तथा लन्दन में 1909 तक राजद्रोहात्मक भाषण देना।

दो आजन्म काले पानी की सजा देते हुए अंग्रेज जज ने लिखा

"We find the accused guilty of the abetment of war by instigating the circulation of printed matter inciting to war... it amounts to declaration of war against British Government."

सावरकर के लेखन को अपने शासन के लिए बहुत बड़ा खतरा मानते हुए अंग्रेज सरकार ने बार-बार प्रतिबंधित किया। विषम परिस्थितियों में इतना विपुल लेखन करने वाले सावरकर एक मात्र क्रांतिकारी थे।

सेल्यूलर जेल में सावरकर का कमरा

जो लोग उन्हें मुस्लिम विरोधी कहते हैं उन्हें ''1857 का स्वातंत्र्य समर'' पढ़ना चाहिये, जिसमें मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा मिला कर अंग्रेजों से लड़ने की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है और यही हिन्दू-मुस्लिम एकता वे स्वतंत्र तथा अखण्ड भारत में भी चाहते थे। भारत माता के प्रति निष्ठा रखने वाले सभी भारतीयों को समान अधिकार, तुष्टिकरण किसी का भी नहीं और मुसलमानों सहित सभी के भारतीयकरण के पक्षधर थे।

वे बचपन से अखण्ड भारत के आराधक थे तथा मातृभूमि की अखण्डता पर किसी प्रकार की आंच उन्हें असह्य थी। ''आसिंधु सिंधु पर्यन्ता यस्य भारत भूमि'' उनकी आराध्या देवी थी।

मुसलमानों में अलगाव की भावना को हवा देने की कांग्रेस और अंग्रेजों की नीति का उन्होंने सदैव विरोध किया। सत्ता पाने के लोभ में विभाजन स्वीकार कर लेने के लिए उन्होंने तत्कालीन नेताओं को कभी माफ नहीं किया। भारत माता के खण्डित स्वरूप का शूल जीवन की अंतिम श्वास तक उन्हें सालता रहा। ''हे सुरसेविनी, पुण्य सलिला मां सिंधु ! तुझे हम कैसे भुला दें। तीन चौथाई भारत मुक्त हुआ है, परन्तु मेरी सिंधु नदी तथा सिंधु प्रदेश छीन लिये गये हैं। हम अपनी सिंधु को भूल नहीं सकते। सिंधु रहित हिन्दू अर्थात् अर्थ रहित शब्द, निष्प्राण देह, यह सब असंभव है, व्यर्थ हैं।''

विनायक सावरकर का स्पष्ट मत था कि विभाजन भारत के किसी भी हिस्से के लिए शुभ नहीं है वरन् यह दोनों के लिए सतत् संघर्ष और आत्मघाती द्वेष का बीजारोपण है। समस्या का समाधान हिन्दू-मुसलमान सभी के भारतीयकरण में है। ●

– क्षेत्रीय संगठन मंत्री,भारतीय इतिहास संकलन योजना, राजस्थान क्षेत्र

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

प.बंगाल में हिंसा

देशभर में हो रहा है विरोध

राजस्थान के 108 विशिष्टजनों द्वारा राष्ट्रपति को भेजा गया ज्ञापन

2000 महिला अधिवक्ताओं ने सर्वोच्च न्यायालय में प्रस्तुत की याचिका

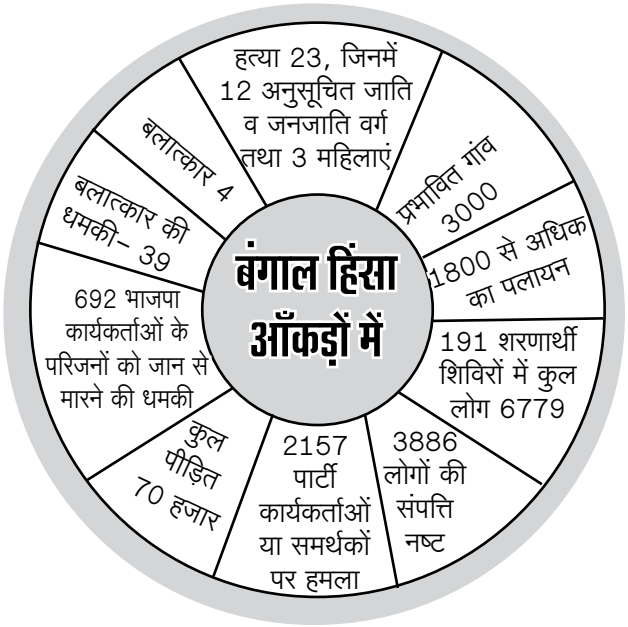

प. बंगाल में विधानसभा चुनाव पश्चात् एक विशेष समुदाय के लोगों द्वारा हिन्दुओं पर लगातार हो रहे हमले तथा मारपीट, आगजनी, तोड़फोड़, हत्या व बलात्कार की घटनाओं ने देश को हिलाकर रख दिया है।

राष्ट्रपति को ज्ञापन – राजस्थान के विभिन्न व्यवसाय व जाति–बिरादरी के प्रमुख 108 लोगों के हस्ताक्षर से महामहिम राष्ट्रपति के नाम लिखित एक ज्ञापन राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र को भेजते हुए प. बंगाल में हिंसा को तत्काल रोकने, हिंसा के जिम्मेदार लोगों को दण्डित करने तथा हिंसा पीड़ितों को पर्याप्त मुआवजा सहित सुरक्षा उपलब्ध कराने की मांग की गई है।

राष्ट्रपति को भेजे गए ज्ञापन पर हस्ताक्षरकर्ता

राज. के अतिरिक्त मुख्य सचिव (सेवानिवृत्त) ओपी सैनी सहित पूर्व प्रशासनिक, पुलिस व अन्य सेवा के अधिकारी यथा बीएल गुप्ता, संजय दीक्षित (जयपुर डायलॉग के अध्यक्ष), आरएन अरविंद,चन्द्रशेखर, ताराचंद सहारण, ओपी गुप्ता, निष्काम दिवाकर, एससी व्यास, भगवान सिंह, एके ओझा, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, गुंजन सक्सेना, प्रवीण खण्डेलवाल, महेन्द्र कुमार नागदा, रामकृपा शर्मा एवं कन्हैया लाल बैरवा(आईपीएस एवं अम्बेडकर पीठ के पूर्व महानिदेशक), राजस्थान उच्च न्यायालय अधिवक्ता परिषद के अध्यक्ष नाथूसिंह राठौड़, राज.बार काउन्सिल के सदस्य देवेन्द्र सिंह व रणजीत जोशी, राज.बार काउन्सिल के पूर्व अध्यक्ष कोटा के महेश चन्द्र गुप्ता, राज. उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति प्रशान्त कुमार अग्रवाल, पूर्व न्यायिक अधिकारी रामनिवास जाट एवं अशोक सक्सेना, महाधिवक्ता या अतिरिक्त महाधिवक्ता जैसे पदों पर कार्य कर चुके व अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता नरपत मल लोढ़ा, जगमोहन सक्सेना, जीएस गिल, अनिल कुमार राजवंशी, धर्मवीर ढोलिया, मनोज गौतम, राजेन्द्र, अनुराग शर्मा एवं श्यामसुन्दर लदरेचा, पद्म श्री से सम्मानित अर्जुन सिंह शेखावत व श्यामसुंदर पालीवाल, पूर्व सैन्य अधिकारी कर्नल देव आनंद, ले.क.अनिमेश त्रिवेदी, सीडीआर बनवारी लाल व शिवराज सिंह राठौड़, द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित रिपुदमन सिंह, अर्जुन पुरस्कार विजेता अपूर्वी चंदेल, गोपाल सैनी, दीनाराम यादव, सुरेन्द्र कटारिया व सुरेश मिश्रा, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी जसवंत सिन्हा, नीतिका, राहुल जांगिड़, हीरानंद कटारिया, विराट पंत, जाह्नवी मेहरा, निर्मलेश माथुर एवं रामावतार सिंह जाखड़, पूर्व कुलपति व अन्य शिक्षाविद् जेपी सिंघल, प्रो.कैलाश सोडाणी, प्रो.जेपी शर्मा, डॉ.लोकेश शेखावत, प्रो. पीके दशोरा, प्रो.आरके कोठारी, डॉ.बीआर छीपा, प्रो.एमएल छीपा, प्रो.अशोक शर्मा, प्रो.बीएल चौधरी, प्रो.हाकमदान चारण, प्रो.एमएल कालरा, डा. उमाशंकर शर्मा एवं प्रो.केसी शर्मा, राज.लोकसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष आरएस गर्ग, अनुसूचित जाति सहित विभिन्न समाज व संस्थाओं के प्रमुख यथा ताराचंद जारोल (अति.मुख्य अभियन्ता सेनि.), डॉ.अम्बेडकर सोसाइटी, राज.के अध्यक्ष भजन लाल, रिजर्व बैंक के सेनि. प्रबंधक बद्रीनारायण, डॉ.जीआर भील, पीडब्लूडी के अति सीई(सेनि.) मिश्रीमल, डॉ. सहीराम मीणा (पूर्व आईआरएस), बीएम मीणा, डॉ.अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसाइटी के प्रदेश उपाध्यक्ष बीएल भाटी, स्टेट बैंक के सेनि. उप प्रबंधक ओपी शर्मा, डॉ.मूलाराम कडेला (बाल चिकित्सा के वरिष्ठ विशेषज्ञ), नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, इसरो(जोधपुर) के पूर्व प्रमुख डॉ.जेआर शर्मा तथा राजस्थान के प्रमुख पत्रकार व स्तम्भ लेखक यथा एसपी मित्तल, जितेन्द्र सिंह शेखावत, गोपाल शर्मा, तुलसीराम महावर, विनय भार्गव, गुलाब बत्रा, राजीव हर्ष, लोकपाल सेठी, राजेश कसेरा, अनन्त आदि।

ज्ञापन में कहा गया है कि इस हिंसा के कारण न केवल लोकतंत्र के आधारभूत सिद्धान्त 'स्वतंत्र चुनाव' को गहरी चोट पहुँची है, वरन संविधान के अनुच्छेद 21 में निहित 'गरिमामय जीवन के अधिकार' का व्यापक स्तर पर हनन हुआ है। वहां नागरिकों के जीवन, संपत्ति व अधिकारों की रक्षा करने के पवित्र दायित्व से राज्य शासन विमुख हो रहा है।

ज्ञापन में अब तक हुई हिंसा का व्यापक ब्यौरा भी दिया गया है। ज्ञापन पर कई पूर्व कुलपतियों सहित 18 शिक्षाविदों, 18 प्रशासनिक अधिकारियों, 20 न्यायिक अधिकारियों व वरिष्ठ अधिवक्ताओं, 6 सेना के पूर्व अधिकारियों व पद्मश्री प्राप्त, 15 पदक विजेता खिलाड़ियों, 13 वरिष्ठ पत्रकारों सहित अनुसूचित जाति-जनजाति व अन्य समाजों के 22 प्रमुख लोगों ने हस्ताक्षर किए हैं।

महिला अधिवक्ताओं द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में याचिका

देशभर की दो हजार से अधिक महिला अधिवक्ताओं ने बंगाल में हो रही हिंसा के विरुद्ध ऑनलाइन हस्ताक्षर कर, पूरे हिंसा-मामलों को प्रलेखित करते हुए, एक याचिका उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति के समझ प्रस्तुत की है।

यचिका में बंगाल में महिलाओं के साथ हो रहे दुष्कर्म, दुर्व्यवहार तथा प्रताड़ना पर रोष प्रकट किया गया है तथा विधि शासन को स्थापित करने की मांग करते हुए नागरिक सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जाने हेतु निवेदन किया गया है।

याचिका में राजस्थान से उदयपुर की अलका जोशी, ऋतु सारस्वत, मंजू हाड़ा, डूंगरपुर की स्वाति पारीक, कोटा की सोनल विजय, राजसमंद की सीमा जैन, बांसवाड़ा की हेमलता, चित्तौड़गढ़ की सुमित्रा सहित 150 से अधिक महिला अधिवक्ताओं ने हस्ताक्षर किए हैं। ●

बंगाल हिंसा : हमें अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी

हिंसा पाप है, परन्तु कायरता महापाप है

प्रणय कुमार

सरकारों के दम पर न तो कभी कोई लड़ाई लड़ी जाती है और न जीती जाती है। सभ्यता के सतत संघर्ष में अपने-अपने हिस्से की लड़ाई या तो स्वयं या संगठित समाज-शक्ति को ही लड़नी होगी।

''ध्रुवीकरण के कारण पश्चिम बंगाल में हिंसा हो रही है, लोग मारे जा रहे हैं, महिलाएँ दुष्कर्म की शिकार हो रही हैं।'' ऐसा विश्लेषण करने वालों से मेरा सीधा सवाल है कि यदि आपकी बहन-बेटी-पत्नी को सामूहिक दुष्कर्म जैसी नारकीय यातनाओं से गुज़रना पड़ता, यदि आपके किसी अपने को राज्य की सत्ता से असहमत होने के कारण प्राण गंवाने पड़ते, क्या तब भी आपका ऐसा ही विश्लेषण होता?

सोचकर देखिए, आप 'सामूहिक दुष्कर्म' जैसे शब्द सुन भी नहीं सकते, उन्होंने भोगा है। बोलने से पहले सोचें। कुछ बातों का राजनीति से ऊपर उठकर खंडन करना सीखें। बौद्धिकता का यह दंभ सनातनी-समाज की सबसे बड़ी दुर्बलता है। 'नहीं जी, मैं उससे अलग हूँ।' कि 'मैं तो भिन्न सोचता हूँ।' कि 'मैं तो मौलिक चिंतक हूँ।' कि 'मैं तो उदार हूँ।' देखो, 'मैं तो तुम्हारे साथ हूँ, उनके साथ नहीं'... आदि-आदि!

जुनूनी-मज़हबी भीड़ यह नहीं सोचती कि आप किस दल के समर्थन में थे? कि आप उनके साथ खड़े थे! आपको निपटाने के लिए आपका सनातनी होना ही पर्याप्त होगा। कश्मीरी पंडित किस ध्रुवीकरण के कारण मारे और खदेड़ दिए गए? वहाँ किसने उकसाया था? पाकिस्तान और बांग्लादेश में लाखों लोग किस ध्रुवीकरण के कारण काट डाले गए? मोपला, नोआखली के नरसंहार क्या ध्रुवीकरण की देन थे? भारत-विभाजन क्या ध्रुवीकरण के कारण हुआ? क्या उस ध्रुवीकरण में सनातनियों की कोई भूमिका थी? गाँधी क्या ध्रुवीकरण कर रहे थे? क्या वे केवल बहुसंख्यकों के नेता थे? ग़जनी, गोरी, अलाउद्दीन, औरंगजेब, नादिरशाह, तैमूर लंग जैसे तमाम हत्यारे शासक और आक्रांता क्या ध्रुवीकरण की प्रतिक्रिया में हिंदुओं-सनातनियों का नरसंहार कर रहे थे?

काशी-मथुरा-अयोध्या-नालंदा-सोमनाथ का विध्वंस क्या ध्रुवीकरण के परिणाम थे? यक़ीन मानिए, इससे निराधार और अतार्किक बातें आज तक नहीं सुनी गईं!

सच तो यह है कि ऐसा विश्लेषण करने वाले विद्वान या तो कायर हैं या दोहरे चरित्र वाले! किसी-न-किसी लालच या भय में उनमें सच को सच कहने की हिम्मत नहीं! बल्कि जो लोग दलगत राजनीति से ऊपर उठकर पश्चिम बंगाल की हिंसा, अराजकता, लूटमार, आगजनी, सामूहिक दुष्कर्म जैसे नृशंस एवं अमानुषिक कुकृत्यों पर एक वक्तव्य नहीं जारी कर सके, अपने सोशल

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

मीडिया एकाउंट पर ऐसे कुकृत्यों का पुरजोर खंडन नहीं कर सके, वे भी ऊँची मीनारों पर खड़े होकर मोदी–योगी–भाजपा को ज्ञान दे रहे हैं। यदि किसी को लाज भी न आए तो क्या उसे निर्लज्जता की सारी सीमाएँ लाँघ जानी चाहिए! मुझे कहने दीजिए कि ढीठ और निर्लज्ज हैं आप, इसलिए पश्चिम बंगाल की राज्य–पोषित हिंसा पर ऐसी टिप्पणी, ऐसा विश्लेषण कर रहे हैं।

हिंसा पाप है, परन्तु कायरता महापाप है। कोई भी केंद्रीय सरकार या प्रदेश सरकार भी आपकी हमारी बहन–बेटी–पत्नी की मर्यादा बचाने के लिए, चौबीसों घंटे हमारी जान की सुरक्षा के लिए पहरे पर तैनात नहीं रह सकती। उस परिस्थिति में तो बिलकुल भी नहीं, जब किसी प्रदेश की पूरी–की–पूरी सरकारी मशीनरी राज्य की सत्ता के विरोध में मत देने वालों से बदले पर उतारू हो! इसलिए आत्मरक्षा के लिए हमें–आपको ही आगे आना होगा। भेड़–बकरियों की तरह जुनूनी–उन्मादी–मज़हबी भीड़ के सामने कटने के लिए स्वयं को समर्पित कर देना महा कायरता है। इससे जान–माल की अधिक क्षति होगी। इससे मनुष्यता का अधिक नुकसान होगा। शांति और सुव्यवस्था शक्ति के संतुलन से ही स्थापित होती है।

जो कौम दुनिया को बाँटकर देखती है, उनके लिए हर समय ग़ैर–मज़हबी लोग एक चारा हैं। जिस व्यवस्था में उनकी 30 प्रतिशत भागीदारी होती है, उनके लिए सत्ता उस प्रदेश को एक ही रंग में रंगने का मज़बूत उपकरण है। गज़वा–ए–हिंद उनका पुराना सपना है। वे या तो आपको वहाँ से खदेड़ देना चाहेंगे या मार डालना। लड़े तो बच भी सकते हैं। भागे तो अब समुद्र में डूबने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा!

हम सनातनियों की सबसे बड़ी दुर्बलता है कि हम हमेशा किसी–न–किसी अवतारी पुरुष या महानायक की बाट जोहते रहते हैं। ईश्वर से गुहार लगाते रहते हैं। आगे बढ़कर प्रतिकार नहीं करते, शिवा–महाराणा की तरह लड़ना नहीं स्वीकार करते। यदि जीना है तो मरने का डर छोड़ना पड़ेगा।

सरकारों के दम पर कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ी व जीती जाती। सभ्यता के सतत संघर्ष में अपने–अपने हिस्से की लड़ाई या तो स्वयं या संगठित समाज–शक्ति को ही लड़नी होगी।

मुट्ठी भर लोग देश के संविधान, पुलिस–प्रशासन, क़ानून–व्यवस्था को ठेंगे पर रखते आए हैं, पर हम–आप केवल अरण्य–रोदन रोते रहे हैं! संकट में घिरने पर इससे–उससे प्राणों की रक्षा हेतु गुहार लगाते रहे हैं! बात जब प्राणों पर बन आई हो तो उठिए, लड़िए और मरते–मरते भी असुरों का संहार कीजिए। आप युद्ध में हैं, युद्ध में मित्रों की समझ भले न हो, पर शत्रु की स्पष्ट समझ एवं पहचान होनी चाहिए। याद रखिए, युद्ध में किसी प्रकार की द्वंद्व–दुविधा, कोरी भावुकता–नैतिकता का मूल्य प्राण देकर चुकाना पड़ता है! इसलिए उठिए, लड़िए और अंतिम साँस तक आसुरी शक्तियों का प्रतिकार कीजिए। हमारे सभी देवताओं ने असुरों का संहार किया है। आत्मरक्षा हेतु प्रतिकार करने पर कम–से–कम आप पर हमलावर समूह में यह भय तो पैदा होगा कि यदि उन्होंने सीमाओं का अतिक्रमण किया, अधिक दुःसाहस किया या जोश में होश गंवाया तो उनके प्राणों पर भी संकट आ सकता है! ●

निःस्वार्थ सेवा के लिए तत्पर

पवन कुमार

जब कोरोना के कारण काल का ग्रास बनी युवा पत्नी का अंतिम संस्कार करके पति घर आया तो अपने 8 साल के बच्चे को गले नहीं लगा पाया, क्योंकि स्वयं कोरोना पॉजिटिव था। तब घर को संभालने के लिए,उस युवा के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए और मातृत्व प्रेम खो चुके बच्चों को आत्मीयता देने के लिए देवदूत रूप में सार–संभाल के लिए आगे आए संघ के स्वयंसेवक! ऐसे ना जाने कितने ही परिवारों की पूर्ण बंधु भाव से आत्मीयता पूर्ण संभाल कर रहे हैं स्वयंसेवक ।

जब समाज में भय का वातावरण बन गया था तो सेवा रूपी यज्ञकुंड में स्वयं को होम करने के लिए चाहे अंतिम संस्कार करना हो या अस्पताल की सफाई करनी हो, हर मोर्चे पर अग्रिम पंक्ति में स्वयंसेवक नजर आते हैं।

जब एक मिशन में लगे लोग जो कि स्वयंसेवक ही हैं एक सपेरा बस्ती में लॉकडाउन लगने के बाद हालचाल पूछने गए तो एक अम्मा ने लगभग रोते हुए बताया कि मैं और मेरी पोती दो दिन से दो–दो ब्रेड खाकर गुजारा कर रहे हैं तो तुरंत ही तंत्र को सक्रिय कर संपूर्ण बस्ती को 400 पैकेट भोजन प्रतिदिन पहुंचाना प्रारंभ कर दिया। अभावों की पूर्ति ही सेवा है इसको हर स्वयंसेवक अपने व्यवहार और आचरण में प्रत्यक्ष करता नजर आता है।

इस महामारी के दौर में भी सेवा के इन भावों के प्रत्यक्ष दर्शन कई जगह हुए, जैसे जयपुर में आयुष 64

रामगंजमंडी में स्वयंसेवकों द्वारा अंतिम संस्कार

की दवाई का वितरण हो, या भीलवाड़ा में होम्योपैथिक दवाई की 60 हजार शीशियों का निर्माण और वितरण हो, या नागौर में ग्रामीण स्तर तक आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाने का काम हो, या स्वच्छता के लिए कोटा सहित लगभग सभी प्रमुख नगरों में सैनेटाइजेशन की व्यवस्था हो, या बूंदी में जरूरतमंदों की पूर्ति के लिए चलाया गया 'राम जी का रसोड़ा' हो, या फिर प्रत्येक संभाग स्तर पर चलाया गया ऑक्सीजन कॉन्संट्रेटर केंद्र हो, इन सभी जगहों पर स्वयंसेवक बढ़-चढ़ कर सभी प्रकार की गतिविधियों को संपन्न कर रहे थे।

राजस्थान के सबसे बड़े कोविड केयर सेंटर आरयूएचएस में भी संघ के 50 स्वयंसेवक मई के प्रारंभ से चार पारियों में सहायता केंद्र चला रहे हैं। स्वयं अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांतरंजन और क्षेत्र प्रचारक निंबाराम ने वहां पहुंच कर स्वयंसेवकों का हौंसला बढ़ाया तथा आस-पास की निर्धन बस्ती में भोजन पैकेट वितरण करने का सुझाव भी दिया ।

व्यापक सेवा कार्य

देश भर में स्वयंसेवकों ने संक्रमित व्यक्तियों और परिवारों को 3315 स्थानों पर लगभग 6 लाख भोजन पैकेट, 3800 स्थानों पर हेल्पलाइन नंबर, कुल 7476 बेड के कोविड सेंटर और लगभग 5000 चिकित्सकों की सहायता से लगभग 1लाख 50 हजार लोगों को चिकित्सा संबंधी परामर्श दिया है, 426 स्थानों पर प्लाज्मा डोनेट किया गया, 1256 स्थानों पर 44 हजार यूनिट रक्त दान किया। लगभग 816 स्थानों पर अंतिम संस्कार की भी व्यवस्था स्वयंसेवकों द्वारा की गई।

कर्नाटक के कोलार स्थान पर वर्षों से धूल फांक रहे एक 800 बेड की क्षमता वाले विशाल अस्पताल की सफाई और मरम्मत करके 10 दिन में उस जर्जर से हो चुके अस्पताल को पुनः उपयोग के लिए तैयार कर दिया।

तूफान में गिरे पेड़ों को उठाते हुए स्वंयसेवक

तूफान पीड़ितों की सेवा-सहयोग

ऐसा कहते हैं जब विपदा आती है तो अकेली नहीं आती। ऐसा ही कुछ भारत के साथ हुआ। इस महामारी के साथ ही ताऊते नामक तूफान ने भारत के समुद्रतटीय क्षेत्रों को भी झकझोर कर रख दिया। अकेले सौराष्ट्र क्षेत्र में इसकी विनाश लीला इतनी थी कि 17000 घर नष्ट हुए, 9000 किमी की बिजली लाइन कट गई, हजारों लोग बेघर हुए भटक रहे थे। ऐसे में तुरंत ही स्वयंसेवक सक्रिय हुए। 17 अप्रैल रात्रि को तूफान का खौफनाक मंजर देखा सभी ने, परन्तु 18 अप्रैल प्रातः देवदूतों की सहायता का दृश्य सर्वदूर दिखाई दे रहा था। राशन किट, चाय-नाश्ता, पेयजल की व्यवस्था और पुनर्वास के लिए आवासों की मरम्मत, साथ ही साथ अस्पतालों में ऑक्सीजन की आपूर्ति निर्बाध चलती रहे इसलिए मार्ग की सभी बाधाओं को दूर करने में स्वयंसेवक तत्परता से जुट गए।

योग शिविर व अन्य

केवल अभावों की पूर्ति ही नहीं अपितु शारीरिक रूप से समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहे इसके लिए जयपुर प्रांत के द्वारा ऑनलाइन योग शिविर भी 7 दिन के लिए लगातार चलाया गया, जिसमें प्रतिदिन सुबह और शाम को विभिन्न प्रकार के योगों के माध्यम से शरीर को किस प्रकार से इस दौर में सुरक्षित और स्वस्थ रखा जा सकता है यह बताया गया।

बारां में 'सेवा की बात आपके साथ' नामक कार्यक्रम से समाज को संबल प्रदान किया गया। चित्तौड़ प्रांत द्वारा सेवा कार्य में लगे कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्धन और अन्य शेष को प्रेरणा देने हेतु 'पंच यज्ञ से परम वैभव' विषय पर बौद्धिक का आयोजन किया जिसमें सुरेश जी सोनी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

भारतीय सिंधु सभा, अजमेर द्वारा बालकों को कुछ सकारात्मक करने को मिले इसलिए 8 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन मिट्टी कला स्पर्द्धा का आयोजन किया गया।

समाज रूपी देवता को अपना आराध्य मानकर निरंतर उसी का हित चिंतन करना और उसके हर सदस्य को अपना आत्मीय बंधु मानकर जब-जब समाज को आवश्यकता महसूस हुई तब-तब स्वयंसेवक स्वप्रेरणा से बिना किसी के बुलाए समाज की आवश्यकता पूर्ति के लिए लग जाता है, बिना किसी पद प्रतिष्ठा की चाह के, और बदले में किसी भी प्रकार की कामना नहीं रख कर समाज के लिए सर्वस्व होम करने की सिद्धता देख कर ही RSS (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) को किसी ने Ready for Selfless Service की संज्ञा से विभूषित किया है तो यह उचित ही है। ●

छबड़ा हिंसा व लूटपाट प्रकरण

'6 सप्ताह से ज्यादा बीत जाने पर भी कार्रवाई नहीं'
पीड़ित हिन्दुओं को कब मिलेगा न्याय?

लोगों में सरकार और प्रशासन के प्रति बढ़ता जा रहा है आक्रोश

छबड़ा के धरनावदा चौराहे पर फलों के ठेले से फल खरीद रहे कमल सिंह की कहासुनी तीन युवकों–फरीद, आबिद और समीर हो गयी थी। कारण बताया गया कि मोटर साइकिलें टकरायी थीं। छोटी सी बात थी, परन्तु मुस्लिम युवकों ने कमल सिंह पर चाकुओं से हमला कर दिया।

सामूहिक हमला

दूसरे दिन 11 अप्रैल को जब इस मामले को दर्ज कराकर प्रशासन को ज्ञापन दिया जा रहा था, उसी दौरान मुस्लिम समुदाय के लोगों ने एकत्र होकर हिन्दू व्यापारियों की दुकानों पर धावा बोल दिया। दुकानों में लूटपाट की गई और कई दुकानों को आग लगा दी। इससे व्यापारियों को करोड़ों रुपयों का नुकसान हुआ। पीड़ित व्यापारी नरेश कालरा, अतुल जैन, योगेन्द्र आदि ने बताया कि लगभग 100–150 उपद्रवियों की भीड़ थी, जिनके हाथों में धारदार हथियार, तलवारें व ज्वलनशील पदार्थ थे।

प्रत्यक्ष प्रमाण के बावजूद कार्रवाई नहीं

इस घटना के सीसीटीवी फुटेज हैं, मोबाइल रिकॉर्डिंग हैं, फोटो हैं। पीड़ित पक्ष ने नामजद एफआईआर दर्ज करायी है। इसके बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई न किए जाने पर विरोध स्वरूप छबड़ा क्षेत्र 8 दिनों तक पूर्ण बंद रहा। प्रशासन ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए कर्फ्यू लगा दिया। उल्टे इस घटना पर आक्रोश व्यक्त करने वाले बजरंग दल तथा विहिप के कई कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया।

हिन्दू समाज आक्रोशित

इससे पूरे हिन्दू समाज में आक्रोश व्याप्त है। विश्व हिन्दू परिषद के आह्वान पर सम्पूर्ण बारां जिले को आधे दिन के लिए बंद रखा गया।

अनूठा विरोध प्रदर्शन

कोरोना लॉकडाउन को देखते हुए हिन्दू समाज ने 23 अप्रैल को एक अनूठे तरीके से अपने आक्रोश को व्यक्त किया। इसके अंतर्गत हिन्दू परिवारों ने अपने घर की चौखट, सीढ़ियों या चबूतरों पर एकत्र होकर अपने हाथों में मांगे लिखी तख्तियाँ, झंडिया व पताकाएं उठाकर प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन पूरे बारां शहर के साथ ही जिले के कई नगरों, कस्बों व गाँवों में एक साथ सुबह आठ बजे किया गया। पूरा हिन्दू समाज उस दिन घर के बाहर आकर अपना आक्रोश व्यक्त कर रहा था। तख्तियों पर उपद्रवियों को गिरफ्तार करने, हिन्दू समाज के लोगों पर झूठे मुकदमे वापस लेने, व्यापारियों को हुए नुकसान की भरपाई दंगाइयों से कराने आदि मांगे लिखी हुई थीं। इस विरोध प्रदर्शन में 5 हजार परिवारों ने अपनी सहभागिता प्रकट की। प्रदर्शन में व्यापार महासंघ, हास्य क्लब, राणा प्रताप सेवा संघ, योग क्लब सहित बारां के लगभग सभी समाज– संगठनों का सहयोग रहा।

3 मई को छबड़ा नगर व तहसील के ग्रामीण क्षेत्र के हजारों परिवारों ने इसी तरह का प्रदर्शन किया। सप्ताह में कम से कम एक बार यह अनूठा प्रदर्शन अभी भी किया जा रहा है।

उपद्रवियों द्वारा आगजनी और तोड़ फोड़

17 अप्रैल को विश्व हिन्दू परिषद ने बारां में एक पत्रकार वार्ता का आयोजन करते हुए दंगाइयों को गिरफ्तार करने की मांग की। राजस्थान क्षेत्र के मंत्री सुरेश चंद्र ने बताया कि विहिप के पदाधिकारियों को बाजार में हुई हानि का अवलोकन तक नहीं करने दिया गया।

विद्यार्थी परिषद ने घटना के विरोध में प्रांत सहमंत्री कोमल मीणा के नेतृत्व में बारां में प्रताप चौक पर प्रदर्शन किया, वहीं बजरंग दल ने भी नगर संयोजक मानवेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में चारमूर्ति चौराहे पर विरोध प्रदर्शन कर दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की। मांगरोल में जुगल मीणा के नेतृत्व में उपखंड कार्यालय पर अभाविप द्वारा प्रदर्शन किया गया। माली समाज ने माली-सैनी यूथ फोरम के जिलाध्यक्ष कैलाश सुमन के नेतृत्व में घटना के विरोध में जिला कलेक्टर को राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया।

3 मई को पीड़ित व्यापारियों की ओर से राजस्थान के राज्यपाल के नाम उपजिला कलेक्टर मनीषा तिवारी को ज्ञापन दिया गया। लगातार दबाव के चलते पुलिस ने 4 मई को मुख्य आरोपियों में से एक राजेश खान को गिरफ्तार कर लिया। यह राजेश खान कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष निजामुद्दीन का भतीजा है। अभी भी शेष आरोपियों को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर रही है। दुकानों में लूट व आगजनी से पीड़ित व्यापारियों द्वारा 24 मई को अनिश्चितकालीन धरना देने हेतु जाते समय पुलिस द्वारा व्यापारियों को ही गिरफ्तार करने के समाचार भी हैं।

ट्विटर पर ट्रेंड हुआ

इस घटना के विरोध स्वरूप 5 मई को एक ट्विटर ट्रेंड भी चला। इसमें लोगों का मानना था कि यह गंभीर विषय भी शासन-प्रशासन द्वारा राजनीतिक तुष्टीकरण जैसे षड्यंत्र की भेंट चढ़ा दिया गया। उक्त ट्विटर ट्रेंड देश भर में उस दिन प्रथम स्थान पर रहा जिसमें 35 हजार ट्वीट किए गए। जिस घटना को प्रशासन दबाने का प्रयास कर रहा था, उसकी जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे देश को हो गई।

हिन्दू समाज चुप नहीं रहेगा

हिन्दू सुरक्षा समिति के संरक्षक प्रताप सिंह नागदा ने बताया कि अब हिन्दू समाज चुप नहीं बैठेगा। जब तक निर्दोष हिन्दुओं पर लगे झूठे मुकदमे वापस नहीं होंगे, व्यापारियों को मुआवजा नहीं मिलेगा तथा दंगाई गिरफ्तार नहीं होंगे तब तक हिन्दू सुरक्षा समिति द्वारा एक नए स्वरूप में प्रतिदिन सरकार व प्रशासन के विरुद्ध प्रदर्शन जारी रहेगा। हिंसा के दौरान प्रशासन जिस प्रकार मूक दर्शक बना रहा तथा हिंसा के बाद दंगाइयों को गिरफ्तार करने के बजाय पीड़ित हिन्दू समाज के कुछ लोगों को गिरफ्तार किया गया इन-सबसे भी कई सवाल खड़े होते हैं, जिनके उत्तर तलाशना आवश्यक है। ●

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

ताकि सबको उपलब्ध हो कोरोना-टीका

स्वदेशी जागरण मंच का पेटेंट फ्री वैक्सीन के लिए अभियान

कोरोना का टीका (वैक्सीन) सबके लिए सुर्वसुलभ हो, इसके लिए स्वदेशी जागरण मंच ने 'पेटेंट-फ्री वैक्सीन' हेतु अभियान चलाया है। लाखों लोगों के हस्ताक्षर वाली याचिकाएं WTO (विश्व व्यापार संगठन), विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों एवं वैक्सीन बनाने वाली कम्पनियों को भेजने का यह अभियान राजस्थान में भी आरम्भ हो गया है। क्या आपने इस याचिका पर हस्ताक्षर कर दिए हैं?

आइए जरा पेटेंट के चक्कर को समझा जाए। किसी भी व्यक्ति या कम्पनी द्वारा कोई नया उत्पाद बना लेने पर उसे अपने उत्पाद का 'पेटेंट' कराने का अधिकार होता है। पेटेंट मिल जाने का परिणाम होता है कि उस उत्पाद के निर्माण का अधिकार उसी व्यक्ति या कम्पनी को होगा। हाँ, वह पेटेंटधारी व्यक्ति या कम्पनी किसी अन्य को भी उस उत्पाद के निर्माण की अनुमति (लाइसेंस) दे सकती है, परन्तु इसके लिए पेटेंटधारी उससे अच्छी-खासी धनराशि (रॉयल्टी) लेता है।

अब वैक्सीन के पेटेंट की बात लें। किसी भी दवा कम्पनी को वैक्सीन बनाने के लिए शोध कार्य कराना

याचिका

वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान

(मानव कल्याण हेतु स्वदेशी जागरण मंच का प्रयास)

प्रिय बंधु व भगिनी,

यह याचिका, वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा (Universal Access to Vaccine & Medicare (UAVM)) अभियान, कोरोना से लड़ने के लिए आपके बहुमूल्य सहयोग की उम्मीद करती है।

आज, कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में मानवता को घेर लिया है। बिस्तर, ऑक्सीजन और दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास नाकाफी साबित हो रहे हैं। टीके और दवाओं की कमी का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि उनके **बड़े पैमाने पर उत्पादन को पेटेंट कानूनों द्वारा बाधित किया जा रहा है।** वर्तमान दर पर, विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या का टीकाकरण होने में 2 से 3 साल लग सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका और कई अन्य राष्ट्रों के साथ भारत सरकार ने TRIPS (व्यापार-संबंधित संपत्ति के बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रावधानों) में छूट के लिए डब्ल्यूटीओ के साथ यह मुद्दा उठाया है। यद्यपि अमेरिका एवं 57 देशों ने इसके लिए समर्थन दिया है, परन्तु कुछ बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनियों और व्यक्तियों द्वारा इसके बारे में असहमति व असहयोग दिखाया जा रहा है।

इस याचिका के माध्यम से, कोविड -19 के संगुत से मानवता को बचाने के लिए, हम निम्नलिखित निवेदन करते हैं:

1. विश्व व्यापार संगठन, बौद्धिक संपदा अधिकार के प्रावधानों में छूट दे।
2. वैश्विक दवा निर्माता (वैक्सीन) कंपनियां स्वेच्छा से, मानवता के लिए, अन्य निर्माताओं को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सहित पेटेंट मुक्त अधिकार दें।
3. सरकार अन्य दवा निर्माताओं (वैक्सीन व दवाईयां) को अनिवार्य लाइसेंस देने के लिए अपने संप्रभु अधिकारों का उपयोग करने सहित आवश्यक कदम उठायें।
4. कोरोना के खिलाफ लड़ने के लिए एवं वैक्सीन और दवाओं के वैश्विक उपलब्धता की सुविधा के लिए, सभी संबंधित व्यक्तियों और संगठनों को बढ़-चढ़कर आगे आना चाहिए।

आइए हम इस पुनीत कार्य के लिए एकजुट होकर आगे आएं।

कृपया याचिका पर हस्ताक्षर करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

https://joinswadeshi.com/form2/

वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाना होगा

पेटेंट कानून से मुक्ति तथा कम्पल्सरी लाइसेंस पर कार्य करे सरकार- धनपत राम

स्वदेशी जागरण मंच के अ.भा. सहसंयोजक डॉ.धनपत राम अग्रवाल ने कहा है कि कोरोना महामारी से बचाव के लिए एकमात्र आशा वैक्सीनेशन ही है। भारत की लगभग 138 करोड़ जनसंख्या के लिए 200 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन चाहिए। वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाना होगा। डॉ.धनपतराम 14 मई को इस विषय पर एक वेबीनार को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पेटेंट कानून में स्वैच्छिक लाइसेंस का प्रावधान है। वैक्सीन विकसित करने वाली कम्पनी अन्य दवा-कम्पनियों को स्वैच्छिक लाइसेंस दे ताकि वैक्सीन उत्पादन बढ़े। यदि निर्माता-कम्पनियां स्वैच्छिक लाइसेंस जारी नहीं करती हैं तो पेटेंट अधिनियम की धारा 84 के अंतर्गत सरकार पेटेंट वाली कम्पनी का अधिकार समाप्त कर किसी अन्य कम्पनी या कम्पनियों को वैक्सीन बनाने के लिए कम्पल्सरी लाइसेंस जारी कर सकती है। धारा 92 के अंतर्गत वैक्सीन का फार्मूला एवं तकनीक (Technology) अन्य कम्पनियों को ट्रान्सफर किया जा सकता है।

डॉ. धनपत राम ने बताया कि यद्यपि भारत ने दक्षिण अफ्रीका व अन्य देशों के साथ मिलकर WTO में कोविड-वैक्सीन को पेटेन्ट-फ्री करने का प्रस्ताव रखा हुआ है, परन्तु प्रथम तो यह एक लम्बी प्रक्रिया है, द्वितीय यह कि सभी देश इसके लिए सहमत हों। विश्व के राष्ट्राध्यक्षों तथा WTO पर दबाव बनाने के लिए ही स्वदेशी जागरण मंच हस्ताक्षर अभियान चला रहा है।

जोधपुर प्रांत द्वारा आयोजित ऐसी ही एक वेबीनार को मुख्य वक्ता खुशबू नेवतिया तथा मुख्य अतिथि धीरज अग्रवाल ने संबोधित किया।

होता है, इसके लिए प्रयोगशाला (लैब) और अन्य संसाधन जुटाने होते हैं। वैक्सीन बन जाने पर उसका परीक्षण करना होता है। इस सारी प्रक्रिया में करोड़ों-अरबों रुपये खर्च होते हैं। इसलिए जिस दवा कम्पनी ने वैक्सीन का विकास कर लिया, उसे पेटेंट मिल जाता है।

अब सार यह है कि या तो पेटेंटधारी कम्पनी उक्त वैक्सीन बना सकती है, या फिर जिस कम्पनी को उसने लाइसेंस दे दिया है, वह कम्पनी वैक्सीन बना सकती है। उस दूसरी कम्पनी को पेटेंटधारी कम्पनी अपने वैक्सीन का फार्मूला व तकनीकी (टेक्नोलॉजी) बता देती है। यानि हर कोई दवा कम्पनी वैक्सीन नहीं बना सकती। पेटेंट कानून इसमें बाधक है। सभी देशों में है यह पेटेंट कानून, और, प्रगति के लिए आवश्यक भी है। परन्तु इस वैश्विक-महामारी के समय जब तक पूरा विश्व कोरोना-मुक्त नहीं हो जाता, खतरा सबको बना रहेगा। अधिकतम लोगों का टीकाकरण ही इसका उपाय है। इसलिए सर्वजन हिताय व विश्व के कल्याण के लिए, (क्योंकि इस समय विश्व के कल्याण में ही सबका बचाव है) यह आवश्यक है कि कोरोना-वैक्सीन के मामले में पेटेंट के प्रावधान में ढील दी जाए तथा जो भी दवा-कम्पनी वैक्सीन बनाना चाहे, उसे पेटेंटधारी कम्पनी अपना फार्मूला व तकनीकी बता दें।

यहां यह भी जानना आवश्यक है कि विश्व स्तर पर पेटेंट संबंधी कानून का नियंत्रण 'विश्व व्यापार संगठन' (WTO) के पास है। सभी देश उसके सदस्य हैं। अतः WTO को पेटेंट संबंधी ढील दिए जाने का निर्णय लेना होगा।

भारत ने दक्षिण अफ्रीका व कई अन्य देशों के साथ मिलकर दिसम्बर 2020 में ही कोरोना वैक्सीन को पेटेंट फ्री करने का प्रस्ताव WTO में प्रस्तुत कर दिया था। नियम यह है कि जब सारे देश इस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे- तभी यह सम्भव होगा। कई देश तथा कोरोना वैक्सीन का विकास करने वाली कम्पनियाँ इस प्रस्ताव का विरोध कर रही हैं। सम्भावना है कि जब करोड़ों-करोड़ों लोगों की याचिका WTO, राष्ट्रप्रमुखों एवं कोरोना वैक्सीन बनाने वाली कम्पनियों के पास पहुँचेंगी तो उनका दिल पसीज जाए और कोरोना वैक्सीन पेटेंट-फ्री हो जाए। इसीलिए स्वदेशी जागरण मंच ने भारत में तथा अन्य देशों में वहां के संबंधित NGO ने यह अभियान छेड़ा हुआ है। आप भी उक्त याचिका पर हस्ताक्षर करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक

नारद जयंती पर पाथेय कण के यू-ट्यूब चैनल का शुभारम्भ

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र और सृष्टि के प्रथम पत्रकार देवर्षि नारद की जयंती ज्येष्ठ कृष्ण एकम् (इस बार 27 मई,2021) को मालवीय नगर स्थित पाथेय भवन में मनाई गई।

नारद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के पश्चात् आयोजित विचार गोष्ठी को पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणक चन्द ने संबोधित करते हुए कहा कि ब्रह्मा के मानस पुत्र देवर्षि नारद आदि पत्रकार थे। उनका पक्ष और विपक्ष दोनों से संवाद रहता था। नारद मुनि सर्वग्राही थे। कार्यक्रम के अंत में पाथेय कण के यू-ट्यूब चैनल का भी शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में संघ के क्षेत्रीय सह प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार उपस्थित थे।

जोधपुर विश्व संवाद केन्द्र द्वारा भी विभाग स्तर पर वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित कर देवर्षि नारद को याद किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया से जुड़े संवाददाताओं और पीएचडी स्कॉलर्स ने भाग लिया। कोटा के पत्रकार मनीष गौतम ने कहा कि देवर्षि नारद अपना काम एक पत्रकार के रूप में पूरी लगन व ईमानदारी के साथ पूर्ण करते थे। लोकमंगल की कामना से जन-जन में अपनी संवाद शैली एवं सम्पर्क कला से अलख जगाने वाले आदि पत्रकार नारदजी का संचार दर्शन भारतीय पत्रकारिता को लोकमंगल की राह दिखाता है।

श्रद्धांजलि

बिछुड़ गए कई कार्यकर्ता

नरेन्द्र सिंह गढ़ी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रचारक नरेन्द्र सिंह गढ़ी का 12 मई,2021 की रात्रि उदयपुर के एक अस्पताल में कोरोना से निधन हो गया। 1 अगस्त,1960 को बांसवाड़ा के गढ़ी ग्राम में आपका जन्म हुआ। आप उदयपुर, चित्तौड़, जयपुर, चूरू तथा सवाईमाधोपुर में जिला प्रचारक रहे। आपने विश्व हिन्दू परिषद व भारतीय किसान संघ में जयपुर प्रांत संगठन मंत्री का दायित्व संभाला। कुछ वर्षों पूर्व प्रचारक जीवन से मुक्त होकर आप पूर्ण रूप से सामाजिक कार्यों में संलग्न थे।

संगठन और समाज की सेवा करते रहे संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता **श्री देवी नारायण पारीक** (सांगानेर विभाग के पूर्व संघचालक) तथा राजसमंद के **श्री सुन्दरलाल पालीवाल** जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन एक श्रेष्ठ स्वयंसेवक के रूप में जिया, आज हमारे बीच नहीं रहे।

पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

घुमन्तु जाति प्रांत सह संयोजक का स्वर्गवास

मृत्युभोज की कुप्रथा बंद करने का अनुकरणीय कार्य

घुमंतु जाति प्रांत सह संयोजक भोमाराम गुर्जर का कोरोना से गत 14 मई को स्वर्गवास हो गया। वे नावां सिटी के नजदीक गांव पांचोता के रहने वाले थे तथा व्याख्याता पद पर कार्यरत थे। उनके पुत्र युगानंद गुर्जर ने गंगा प्रसादी के रूप में होने वाले मौसर (मृत्युभोज) को नहीं करने का निर्णय लेकर समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है।

पाथेय कण परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके पुत्र युगानंद का अभिनंदन करता है।

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला

मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हिन्दू धार्मिक आयोजनों पर प्रतिबंध या शर्तें लगाना गलत

मुस्लिम तुष्टीकरण में लगी सरकारें क्या सबक लेंगी?

हाल ही में धार्मिक अधिकार से जुड़े एक मामले में मद्रास हाई कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा है कि मुस्लिम बहुल हो गए क्षेत्र में हिन्दुओं को अपने परम्परागत धार्मिक आयोजन का पूरा अधिकार है। प्रशासन द्वारा उन पर शर्तें थोपना गलत है।

भारत में देखा गया है कि जैसे ही किसी क्षेत्र में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ जाती है, उन्हें हिन्दुओं के धार्मिक आयोजनों पर आपत्ति होने लगती है। ऐसा ही एक मामला तमिलनाडु से आया है। तमिलनाडु के पेरम्बलूर जिले के कलाथुर गांव में 2012 के पहले वहां का मुस्लिम समाज बहुसंख्यक

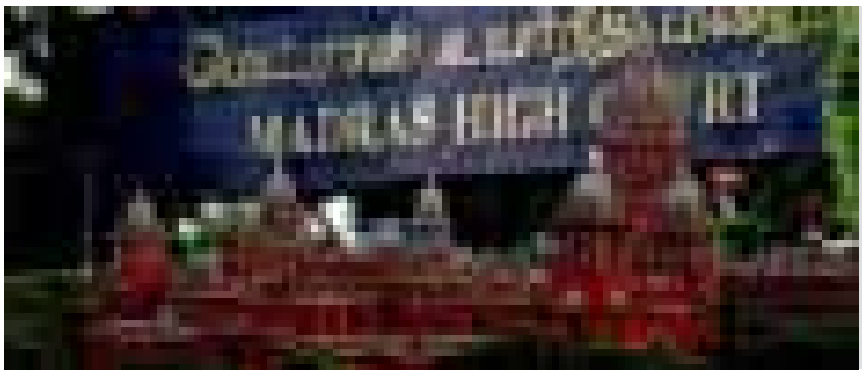

हिन्दू समाज के साथ आराम से रह रहा था। परन्तु, 2012 आते-आते मतांतरण के परिणामस्वरूप यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल हो गया। तब मुसलमानों ने हिन्दुओं के मंदिरों में होने वाले आयोजनों का विरोध प्रारंभ कर दिया। इन मंदिरों के तीन दिन तक चलने वाले आयोजनों में जब सड़कों व गलियों से परम्परानुसार जुलूस निकाला

मेघालय उच्च न्यायालय ने कहा था-

"भारत को इस्लामिक देश बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।"

मेघालय उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सुदीप रंजन सेन ने एक मुकदमे में फैसला देते हुए लिखा था, ''मैं यह स्पष्ट करता हूँ कि किसी भी व्यक्ति को भारत को इस्लामिक देश बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। न्यायमूर्ति ने मोदी सरकार में विश्वास जताते हुए कहा कि वे भारत को इस्लामिक राष्ट्र नहीं बनने देंगे। 10 दिसम्बर, 2018 को दिए गए इस निर्णय में उन्होंने यह भी लिखा, ''पाकिस्तान ने अपने को इस्लामिक देश घोषित किया था। चूंकि भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था, इसलिए भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाना चाहिए था, लेकिन इसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाए रखा।''

न्यायमूर्ति सेन ने यह भी कहा, ''मैं इस देश में पीढ़ियों से रहने वाले मुस्लिम भाइयों और बहिनों के खिलाफ नहीं हूँ। उन्हें इस देश में शांतिपूर्वक रहने का पूरा अधिकार है।'' उन्होंने सरकार से समान नागरिक संहिता बनाने की अपील भी की तथा कहा कि जो भी भारतीय कानून और संविधान का विरोध करे उसे देश का नागरिक नहीं माना जाना चाहिए।

हालांकि बाद में मेघालय हाईकोर्ट की खण्डपीठ ने न्यायमूर्ति मोहम्मद याकूब मीर की अध्यक्षता में उक्त फैसले को बदल दिया और कहा कि वह फैसला संवैधानिक सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है।

जाता तो मुसलमानों द्वारा उस पर पत्थरबाजी की जाने लगी। मुसलमानों का कहना था कि मंदिरों के उत्सवों की परम्पराएं एवं पूजा पद्धति इस्लाम के विरुद्ध हैं, इसलिए उन्हें रोक देना चाहिए। जुलूस मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से नहीं गुजरना चाहिए।

मामला पहले प्रशासन के पास, फिर निचली अदालत में गया। दोनों ही जगह कुछ पाबन्दियों के साथ उत्सव के आयोजन की अनुमति दी गई। मामला 2015 में मद्रास हाईकोर्ट पहुँचा। लम्बी सुनवाई के पश्चात् न्यायमूर्ति पी. वेलमुरगन एवं न्यायमूर्ति एन. किरुबकरन की बेंच ने निर्णय देते हुए कहा कि यदि इस मामले में मुस्लिम पक्ष की दलील को मान लिया जाए तो फिर शेष भारत के क्षेत्रों में ऐसी स्थिति बन जाएगी कि अल्पसंख्यक धर्म के लोग कोई भी त्योहार या जुलूस नहीं निकाल पाएंगे। कोर्ट ने यह भी कहा कि दशकों से चली आ रही परम्परा को धार्मिक अहिष्णुता के नाम पर रोका नहीं जा सकता। सड़कों, गलियों पर कोई धर्म दावा नहीं कर सकता। वे सबके लिए हैं। कोर्ट ने बिना किसी प्रतिबंध के हिन्दुओं को जुलूस निकालने की अनुमति देते हुए कहा कि कानून व्यवस्था की किसी भी तरह की समस्या होने पर पुलिस को हस्तक्षेप करना होगा।

न्यायालय ने कहा कि पूरा मामला साफ था। इसमें विवाद का प्रश्न ही नहीं था। स्थानीय प्रशासन ने आखिर इसे विवाद का रूप कैसे लेने दिया? उत्सवों पर रोक या परम्पराओं पर शर्तें थोपना एक वर्ग के मूलभूत अधिकारों का हनन था। उच्च न्यायालय ने यह भी कहा, कि यह अत्यंत दुःख का विषय है कि हिन्दुओं को, भारत में बहुसंख्यक होते हुए भी, अपनी पूजा जैसे मूल अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय की शरण में जाना पड़ रहा है।

मद्रास हाईकोर्ट का यह फैसला मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाली सरकारों और लिबरलों के मुंह पर तमाचा है। क्या ऐसी सरकारें इस निर्णय से कोई सबक लेंगी?●

कोरोना महामारी में स्वरा भास्कर, कन्हैया कुमार, योगेन्द्र यादव और प्रशांत भूषण कहाँ हैं?

वेद माथुर

हमारे देश में आंदोलन करवाने वाले कुछ प्रोफेशनल लोग हैं। इनमें से अधिकांश का रोजगार और आय का माध्यम आंदोलन करना और करवाना है। इसलिए इन्हें आंदोलनजीवी भी कहा जाता है। अपने आंदोलन के इस 'बिजनेस' से ये करोड़पति ही नहीं वरन अरबपति भी हो गए हैं। ये नए-नए मुद्दे ढूंढ कर लाते हैं – जैसे असहिष्णुता, लिंचिंग, सीएए और न जाने क्या-क्या?

इन आंदोलनजीवियों में कन्हैया कुमार, स्वरा भास्कर, राणा अयूब, प्रशांत भूषण, योगेंद्र यादव जैसे कुछ जाने-माने नाम हैं। इनका एक मुद्दा टाँय-टाँय फिस्स होता है तो ये नया मुद्दा पकड़ लेते हैं। इनके अपने आंदोलन फ्लॉप हो जाते हैं तब कोई और आंदोलन कर रहा होता है तो उसकी गोद में जाकर बैठ जाते हैं।

खैर, समाज के विभिन्न मुद्दों के प्रति इतने 'जागरूक' रहने वाले ये लोग इस कोरोना महामारी में गायब हैं। कन्हैया कुमार कहीं नजर नहीं आ रहे। काश! स्वरा भास्कर सोनू सूद द्वारा किए जा रहे कार्यों का 1% भी काम करके ही दिखा देती।

योगेंद्र यादव किसान आंदोलन के माध्यम से अराजकता के साथ-साथ कोरोना वायरस फैलाने में लगे हैं। किसी महामारी पीड़ित को दो रोटी जुगाड़ करवाने में उन्होंने कभी मदद नहीं की। प्रशांत भूषण भी अरबपति हैं पर किसी की सहायता के लिए जेब से धेला भी नहीं निकाला और राणा अयूब अपनी सहेली बरखा दत्त के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि निरंतर खराब करने में लगी है।

अच्छा होता कि ये सारे समाजसेवी कोरोनाकाल में जनता की सेवा करने के लिए आगे आते। इन लोगों ने प्रवासी मजदूरों के पलायन के समय बड़ी हाय-तौबा मचायी। परन्तु इन लोगों ने किसान आंदोलन के समय किसानों के लिए भोजन से लेकर मालिश तक की व्यवस्था की, ताकि आंदोलन की आग में घी डाला जा सके। लेकिन पलायन करते मजदूरों को पानी तक नहीं पिलाया।

अंक 1 जून, 2021 में प्रकाशित

बरखा दत्त ने व्यवस्था को बदनाम करने के लिए अपने पिता की मृत्यु को भी नहीं छोड़ा

बरखा दत्त के पिता का कोरोना के कारण निधन होना एक दुःखद समाचार है, परन्तु उसने अपने पिता की मृत्यु को भी सरकार विरोधी समाचार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अपने पिता की बीमारी के बारे में किए एक ट्वीट में लिखा **''मेरे पिता ठीक से सांस नहीं ले पा रहे हैं। ऑक्सीजन वाली कोई एंबुलेंस नहीं मिली, इसलिए रास्ते में हालत और खराब हो गई। गुस्सा आ रहा है लेकिन घटिया सिस्टम को कैसे ठीक किया जाए?''** एक विदेशी चैनल सीएनएन के किम ब्रुनहुबर के साथ इंटरव्यू में बरखा दत्त ने कहा, 'जो प्राइवेट एंबुलेंस उन्हें हॉस्पिटल लेकर गई, उसमें लगा ऑक्सीजन सिलेंडर काम नहीं कर रहा था।''

इस साक्षात्कार के बारे में ट्वीट करते हुए ब्रुनहुबर ने लिखा,**'' बरखा दत्त ने मुझे बताया कि एंबुलेंस में ऑक्सीजन नहीं थी, श्मशान में (दाह-संस्कार के लिए) कोई जगह नहीं थी। कितनी हृदय विदारक स्थिति है।''**

लेकिन एंबुलेंस के ड्राइवर ने बरखा दत्त को झूठा बताते हुए कहा है कि एंबुलेंस में ऑक्सीजन का एक बड़ा सिलेंडर था, जिसका उपयोग बरखा दत्त के पिता ने किया था।

उक्त एंबुलेंस के ड्राइवर सोनू का वक्तव्य- ''एम्बुलेंस में ऑक्सीजन का सिलेंडर भरा हुआ था। बरखा दत्त ने ऑक्सीजन के बारे में पूछा था और स्वयं ने ऑक्सीजन के प्रवाह की जांच भी की थी। हम बिना किसी समस्या के अस्पताल पहुँचे थे। मरीज बिना किसी परेशानी के एंबुलेंस से नीचे उतर गया था। वह क्यों झूठ बोल रही हैं? मैंने उन्हें दिखाया था कि ऑक्सीजन सिलेंडर ठीक से काम कर रहा है। ''

सेवा इंटरनेशनल को ट्विटर द्वारा डोनेशन पर
वामपंथियों-सेक्युलरों द्वारा विरोध

ट्विटर के मुख्य प्रबन्धक अधिकारी जैक डॉर्सी ने कोरोना से संघर्ष में भारत को 110 करोड़ रुपये (15 मिलियन डॉलर) दान दिए हैं। यह राशि भारत के तीन एनजीओ (गैर सरकारी संगठन) को मिलेगी। इन तीन में 'सेवा इंटरनेशनल'भी एक संस्था है, जिसे 2.5 मिलियन डॉलर (15 करोड़ रुपये) दिए गए हैं।

सेवा इंटरनेशनल सेवा से संबंधित संगठन है जो अमेरिका के टेक्सास शहर से चलाया जा रहा है। इसने अब तक प्राप्त सहायता राशि से भारत में ऑक्सीजन कंसंट्रेटर, वेंटिलेटर व अन्य आवश्यक मशीन तथा उपकरण खरीदे हैं।

परन्तु 'सेवा भारती' या संघ से जुड़ी संस्था को डोनेशन दिया जाना तथाकथित प्रगतिवादियों-वामपंथियों-सेक्यूलरों को हजम नहीं हो रहा है। इस महामारी के समय भी वे अपनी विषैली प्रवृत्ति को छोड़ नहीं पा रहे हैं। ऐसे लोगों ने सेवा इंटरनेशनल को दिए डोनेशन के लिए जैक डॉर्सी की निंदा की है और मांग की है कि उसे दिया गया दान वापस लिया जाए।

बता दें कि कोरोना की पहली लहर में देशभर में सेवा कार्यों के लिए 'इंडिया-टुडे' मीडिया ग्रुप ने 'सेवा भारती' को पुरस्कृत किया था। इस दूसरी लहर में भी गैर सरकारी स्तर पर सबसे ज्यादा सेवा कार्य सेवा भारती के माध्यम से ही किए जा रहे हैं।

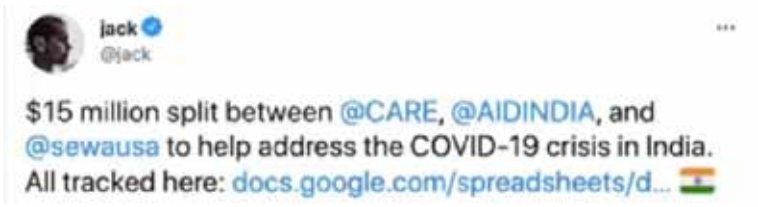

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

6

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज रावत

उन्हीं दिनों कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन का वार्षिक उत्सव था। जिज्ञासु सुभाष उसमें शामिल हुए। वहां पहली बार स्वामी विवेकानंद के दर्शन किए।

स्वामी जी के संबोधन से जादुई प्रभाव हुआ... उनका हृदय जगत के सत्य जानने के लिए वैराग्य पथ पर बढ़ने... को आतुर हो उठा...

युवा सुभाष रात्रि को ही घर से निकल पड़े... सत्य व जीवन के मर्म को जानने...। धार्मिक संस्थानों के निकट जाने का प्रयास किया...

कई सिद्ध-महात्माओं से मिले किंतु कहीं सत्य न मिला।... साधुता के पीछे ऐसे पतित दृश्य देखे कि उनकी आत्मा कराह उठी...

सुभाष वैराग्य यात्रा से वापस लौट आये... किंतु लम्बी यात्राओं ने उन्हें दुर्बल व रोगी बना दिया था... माता-पिता की आंखों में अश्रु बह निकले-

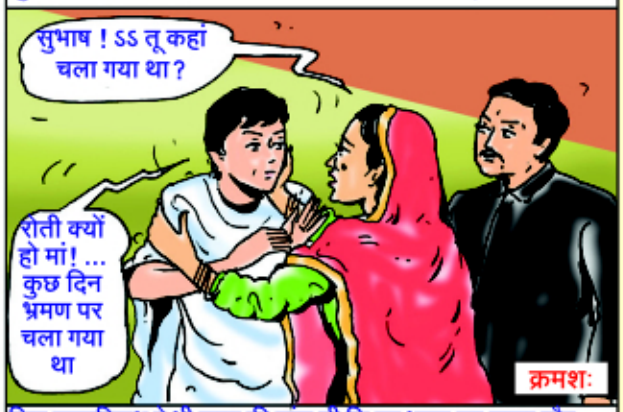

पिता जानकीनाथ ने भी राहत की सांस ली कि पुत्र भटक कर वापस लौट आया। उन्होंने उसे शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए समझाया।

पाक्षिक
पाथेय कण
16 जून, 2021

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
1 से 15 जुलाई, 2021
(आषाढ़ कृ.7 से आषाढ़ शु. 5, वि.सं. 2078)

जन्म दिवस
आषाढ़ कृ.10 (4 जुलाई) – श्री नमिनाथ जयंती (21वें तीर्थंकर)
6 जुलाई (1901) – डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती
6 जुलाई (1905) – श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर 'मौसीजी' जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि
3 जुलाई (2005) – स्वामी रामसुखदास जी महाराज की पुण्यतिथि
14 जुलाई (1660) – मराठा योद्धा बाजीप्रभु देशपाण्डे की शहादत
14 जुलाई (2003) – रा.स्व.संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया' की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर
1 जुलाई – चिकित्सक दिवस
4 जुलाई (1943) – सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च अधिकारी बने
11 जुलाई – विश्व जनसंख्या दिवस
आषाढ़ शु.2 (12जुलाई) – भगवान जगन्नाथ की पुरी (ओड़िशा) में रथयात्रा

पंचांग- आषाढ़ (कृष्ण-पक्ष)
युगाब्द-5123, वि.सं.-2078, शाके-1943
(25 जून से 10 जुलाई,2021)

चतुर्थी व्रत - 27 जून, **पंचक प्रारम्भ** -28 जून (दोहपर 12.59 बजे), **पंचक समाप्त** - 3 जुलाई (प्रातः 6.14 बजे), **योगिनी एकादशी व्रत** - 5 जुलाई (स्मार्त) (वैष्णव 6 जुलाई), **प्रदोष व्रत/रोहिणी (जैन) व्रत**- 7 जुलाई, **पितृकार्य अमावस्या** - 9 जुलाई, **देवकार्य अमावस्या**- 10 जुलाई

ग्रह स्थिति
चन्द्रमा : 25-26 जून **धनु** राशि में, 27-28 जून **मकर** राशि में, 29-30 जून **कुंभ** राशि में, 1 से 3 जुलाई **मीन** राशि में, 4-5 जुलाई **मेष** राशि में, 6 से 8 जुलाई उच्च की राशि **वृष** में तथा 9-10 जुलाई **मिथुन** राशि में गोचर करेंगे।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष में वक्री **गुरु** और **शनि** यथावत कुंभ व मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष व वृश्चिक राशि में बने रहेंगे। **शुक्र** व **मंगल** कर्क में तथा **सूर्य** मिथुन राशि में विचरण करेंगे। **बुध देव** 7 जुलाई को प्रातः 11.04 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे।

शत शत नमन

जन्म दिवस

21 वें जैन तीर्थंकर
श्री नमिनाथ जी
आषाढ़ कृ. 10(4 जुलाई)

जनसंघ के संस्थापक
डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी
6 जुलाई

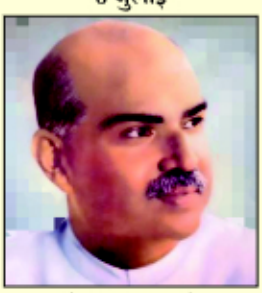

(1901-1953)

रा.सेविका समिति की संस्थापिका
लक्ष्मीबाई केलकर
6 जुलाई

(1905-1978)

पुण्यतिथि

मराठा योद्धा
बाजीप्रभु देशपाण्डे
14 जुलाई

(1615-1660)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जून, 2021 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,